ISC EXAMINATION PAPER- 2025
HINDI
Class-12th
(Solved)

Maximum Marks: 80
Time Allotted: Three hours

Reading Time: Additional Fifteen Minutes

1. *You are allowed an additional fifteen minutes for only reading the question paper.*
2. *You must NOT start writing during reading time.*
3. *It is divided into two sections: Section A and Section B.*
4. *It has **fifteen questions** in all.*
5. *Section A has three questions. All questions are compulsory.*
6. *While attempting Multiple Choice Questions in Section A. You are required to write only ONE option as the answer.*
7. *Section B has twelve questions. You are required to attempt any four questions in this section on any three out of the four prescribed textbooks.*
8. *The intended marks for questions are given in brackets [].*

SECTION A

LANGUAGE– 40 Marks

Question 1 **[15]**

Write a composition in approximately 400 words in Hindi on any one of the topics given below.

किसी एक विषय पर हिन्दी में निबन्ध लिखिए जो लगभग 400 शब्दों से कम न हो।

(i) भारतीय संस्कृति में भोजन पकाने को पाक–कला कहा गया है। भारतीय व्यंजनों में स्नेह, स्वाद तथा सुगंध का अनोखा संगम होता है। आपको भारतीय भोजन की कौन–कौन-सी विशेषताएँ प्रभावित करती हैं? विविध प्रकार के भारतीय व्यंजन दुनिया के अनेक हिस्सों में लोगों के बीच तेज़ी से क्यों लोकप्रिय होते जा रहे हैं? समझाकर लिखिए।

(ii) 'दूसरों के दर्द का अहसास उसे ही होता है, जिसने खुद जीवन में दर्द सहा हो।' इस कथन को ध्यान में रखते हुए अपने किसी ऐसे अनुभव का वर्णन कीजिए जहाँ आपने उक्त कथन की सार्थकता को समझा। अपने उस अनुभव से आपने क्या सीखा? समझाकर लिखिए।

(iii) भारतीय प्रजातंत्र में प्रत्येक नागरिक को अठारह वर्ष की उम्र में मतदान का अधिकार मिलता है। जब आप मतदान करने योग्य हो जाएँगे तो किसी उम्मीदवार को मत देते समय किन–किन बातों का विशेष ध्यान रखेंगे ताकि अपने बहुमूल्य मत द्वारा आप एक योग्य प्रतिनिधि का चुनाव कर सकें। तर्क सहित अपने विचार लिखिए।

(iv) 'कृत्रिम बुद्धिमता (AI) का बढ़ता उपयोग विद्यार्थियों को आधुनिक युग की चुनौतियों का सामना करने में समक्ष बना रहा है।' इस विषय के पक्ष या विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

(v) 'साइकिल चलाना स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत ही महत्त्वपूर्ण है'– इस कथन को ध्यान में रखते हुए आपके विद्यालय ने एक 'साइकिल रैली' का आयोजन किया। आपने भी अपने मित्रों के साथ उसमें भाग लिया। इसके लिए आपने क्या-क्या तैयारियाँ की और इन सब में आपका अनुभव कैसा रहा? वर्णन कीजिए।

(vi) निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर मौलिक कहानी लिखिए।

(a) 'अच्छे-बुरे की पहचान विपत्ति के समय ही होती है।'

(b) निम्नलिखित वाक्य से अंत करते हुए एक कहानी लिखिए।

.... और इस तरह उन्होंने मुझे माफ कर दिया।

Question 2

Read the passage given below carefully and answer the questions that follow, using your own words in Hindi.

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और अपने शब्दों का प्रयोग करते हुए दिए गए प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में दीजिए।

महाकवि कालिदास के कंठ में साक्षात् सरस्वती का वास था। शास्त्रार्थ में उन्हें कोई पराजित नहीं कर सकता था। अपार यश, प्रतिष्ठा और सम्मान पाकर कालिदास को अपनी विद्वता पर घमण्ड हो गया था।

उन्हें लगा कि उन्होंने विश्व का सारा ज्ञान प्राप्त कर लिया है और अब सीखने को कुछ बाकी नहीं बचा। उनसे बड़ा ज्ञानी संसार में कोई दूसरा नहीं है। एक बार पड़ोसी राज्य में शास्त्रार्थ का निमंत्रण पाकर कालिदास, राजा विक्रमादित्य से अनुमति लेकर अपने घोड़े पर रवाना हुए।

गर्मी का मौसम था। धूप काफी तेज़ थी और लगातार यात्रा से कालिदास को प्यास लग आई थी। थोड़ा तलाश करने पर उन्हें एक टूटी झोपड़ी दिखाई दी। झोपड़ी के सामने एक कुआँ भी था। पानी की आशा में वे उस ओर बढ़ चले।

कालिदास ने सोचा कि कोई झोपड़ी में हो तो उससे पानी देने का अनुरोध किया जाए। उसी समय झोपड़ी से एक छोटी बच्ची मटका लेकर निकली। बच्ची ने कुएँ से पानी भरा और वहाँ से जाने लगी।

कालिदास उसके पास जाकर बोले— "बालिके! बहुत प्यास लगी है, ज़रा पानी पिला दे।"

बालिका ने पूछा— "आप कौन हैं? मैं आपको जानती भी नहीं, पहले अपना परिचय दीजिए।"

कालिदास को लगा कि मुझे कौन नहीं जानता, भला मुझे परिचय देने की क्या आवश्यकता? फिर भी प्यास से बेहाल थे, तो बोले— "बालिके! अभी तुम छोटी हो इसलिए मुझे नहीं जानती। घर में कोई बड़ा हो तो उसे भेजो। वह मुझे देखते ही पहचान लेगा। दूर-दूर तक मेरा बहुत नाम और सम्मान है। मैं बहुत विद्वान व्यक्ति हूँ।

कालिदास के बड़बोलेपन और घमंड भरे वचनों से प्रभावित हुए बिना बालिका ने पानी से भरा मटका उठाया और झोपड़ी के भीतर चली गई। अब तो कालिदास हताश हो गए। प्यास से शरीर की शक्ति घट रही थी। दिमाग चकरा रहा था। उन्होंने आशा से झोपड़ी की तरफ देखा। तभी अंदर से एक वृद्धा निकली। उसके हाथ में एक खाली मटका था। वह कुएँ से पानी भरने लगी। अब तक काफी विनम्र हो चुके कालिदास बोले— "माते! पानी पिला दीजिए, बड़ा पुण्य होगा।"

वृद्धा बोली— "बेटा मैं तुम्हें नहीं जानती। अपना परिचय दो। मैं अवश्य पानी पिला दूँगी।"

कालिदास ने कहा— "मैं मेहमान हूँ, कृपया पानी पिला दीजिए।"

वृद्धा बोली— "तुम मेहमान कैसे हो सकते हो? संसार में दो ही मेहमान हैं। पहला धन और दूसरा यौवन। इन्हें जाने में समय नहीं लगता। सत्य बताओ, तुम कौन हो?"

वृद्धा के तर्क से पराजित कालिदास बोले— "मैं सहनशील हूँ। अब आप पिला दीजिए।"

वृद्धा ने कहा— "नहीं, सहनशील तो दो ही है। पहली, धरती जो पापी-पुण्यात्मा सबका बोझ सहती है। उसकी छाती चीरकर बीज बो देने से भी अनाज के भण्डार देती है। दूसरे, पेड़ जिनको पत्थर मारो फिर भी मीठे फल देते हैं। तुम सहनशील नहीं हो। सच बताओ, तुम कौन हो?"

कालिदास लगभग मूर्च्छा की स्थिति में आ गए और तर्क-वितर्क से झल्लाकर बोले— "मैं हठी हूँ।"

वृद्धा बोली— "फिर असत्य! हठी तो दो ही है— पहला नख और दूसरे केश, कितना भी काटो बार-बार निकल आते हैं। सत्य कहें ब्राह्मण, कौन हैं आप?" पूरी तरह अपमानित और हताश हो चुके कालिदास ने कहा— "फिर तो मैं मूर्ख ही हूँ।"

"नहीं, तुम मूर्ख कैसे हो सकते हो? मूर्ख दो ही हैं। पहला, राजा जो बिना योग्यता के भी सब पर शासन करता है और दूसरा, दरबारी पंडित जो राजा को प्रसन्न करने के लिए गलत बात पर भी तर्क देकर उसको सही सिद्ध करने की चेष्टा करता है।"

कुछ न बोल सकने की स्थिति में कालिदास वृद्धा के पैरों पर गिर पड़े।

वृद्धा ने कहा— "उठो वत्स!" आवाज सुनकर कालिदास ने ऊपर देखा तो साक्षात् माता सरस्वती वहाँ खड़ी थीं। कालिदास पुनः नतमस्तक हो गए।

माता सरस्वती ने कहा— "शिक्षा से ज्ञान आता है न कि अहंकार। तूने शिक्षा के बल पर प्राप्त मान और प्रतिष्ठा को ही अपनी उपलब्धि मान लिया और अहंकार कर बैठे इसलिए मुझे तुम्हारे चक्षु खोलने के लिए ये स्वांग भरना पड़ा।"

यह सुनकर कालिदास का अहंकार चूर-चूर हो गया। आज पहली बार उन्हें अपने ज्ञान की निस्सारता का अहसास हुआ।

प्रश्नः—

(i) महाकवि कालिदास को किस बात का घमण्ड हो गया था और क्यों? **[3]**

(ii) कालिदास द्वारा अपना परिचय 'मेहमान' एवं 'सहनशल' कहकर दिए जाने पर प्रत्युत्तर में वृद्धा ने क्या तर्क दिए? समझाकर लिखिए। **[3]**

(iii) माता सरस्वती को किसका स्वांग भरना पड़ा? इस स्वांग के पीछे उनका मकसद क्या था? वे अपने मकसद में किस प्रकार कामयाब हुईं? **[3]**

(iv) निम्नलिखित पंक्तियों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर के लिए सही विकल्प चुनिए।

"बालिके! अभी तुम छोटी हो इसलिए मुझे नहीं जानती। घर में कोई बड़ा हो तो उसे भेजो। वह मुझे देखते ही पहचान लेगा। दूर-दूर तक मेरा बहुत नाम और सम्मान है। मैं बहुत विद्वान व्यक्ति हूँ।"

(a) "बालिके! अभी तुम छोटी हो इसलिए मुझे नहीं जानती।"—इस कथन के पीछे कालिदास का क्या भाव था? [1]

(1) संशय का भाव **(2)** अहंकार का भाव

(3) समानता का भाव **(4)** अरूचि का भाव

(b) बालिका ने उन्हें पानी क्यों नहीं पिलाया? [1]

(1) बालिका अभी बहुत छोटी थी।

(2) वह उन्हें देखकर डर गई थी।

(3) वह किसी बड़े को बुलाने गई थी।

(4) व्यक्ति ने अपना परिचय नहीं दिया था।

(c) "......... मेरा बहुत नाम और सम्मान है।"—वाक्य का क्या आशय है? [1]

(1) कालिदास के बहुत नाम हैं।

(2) कालिदास बहुत विनम्र हैं।

(3) कालिदास बहुत चर्चित हैं।

(4) कालिदास बालिका को डरा रहे हैं।

(v) निम्नलिखित पंक्तियों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर के लिए सही विकल्प चुनिए।

"शिक्षा से ज्ञान आता है न कि अहंकार। तूने शिक्षा के बल पर प्राप्त मान और प्रतिष्ठा को ही अपनी उपलब्धि मान लिया और अहंकार कर बैठे..."

(a) उक्त पंक्तियाँ किस संदर्भ में कही गई हैं? [1]

(1) कालिदास की आँखें खोलने के लिए।

(2) उनके ज्ञान का गुणगान करने के लिए।

(3) उन्हें मान और प्रतिष्ठा दिलाने के लिए।

(4) उनका अपमान करने के लिए।

(b) वृद्धा को अपना परिचय देते समय कालिदास की मन:स्थिति कैसी थी? [1]

(1) उत्साह और ग्लानि भरी

(2) विनम्रता और विरक्ति भरी

(3) संयम और सद्भावना भरी

(4) विवशता और व्याकुलता भरी

(c) कालिदास वृद्धा के पैरों पर क्यों गिर पड़े? [1]

(1) प्यास के कारण उनका गला सूख गया था।

(2) बहुत दूर से आने के कारण वे थक गए थे।

(3) वृद्धा के तर्कों से वे निरुत्तर हो गए थे।

(4) प्यास के कारण वे मूर्च्छित हो गए थे।

Question 3

(A) Do as directed:

निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

(i) निम्नलिखित वाक्य का शुद्ध रूप लिखिए। [1]

अब और स्पष्टीकरण करने की आवश्यकता नहीं है।

(ii) रिक्त स्थान में सही शब्द भरिए। [1]

हमें हमेशा दूर के .... सुहाने लगते हैं।

(iii) निम्नलिखित वाक्यों में से शुद्ध वाक्य का चयन कीजिए। [1]

(a) शरीर से ताकत होनी चाहिए।

(b) शरीर में ताकत होनी चाहिए।

(c) शरीर के भीतर ताकत होनी चाहिए।

(d) शरीर पर ताकत होनी चाहिए।

(iv) निम्नलिखित वाक्यों में से अशुद्ध वाक्य का चयन कीजिए। [1]

(a) रमेश को जल्दी घर जाना है।

(b) मुझे अभी घर नहीं जाना है।

(c) मेरे को माँ के साथ घर जाना है।

(d) हम सभी घर जा रहे हैं।

(v) निम्नलिखित वाक्य में रेखांकित शब्द के लिए सही शब्द का चयन कीजिए।

भारत माता के पैरों में पराधीनता की <u>जंजीरें</u> पड़ी हुई थीं। [1]

(a) बेड़ियाँ (b) कड़ियाँ

(c) हथकड़ियाँ (d) लड़ियाँ

(B) Do as directed:

निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

(i) निम्नलिखित मुहावरे से वाक्य बनाइए। [1]

गज भर की छाती होना

(ii) निम्नलिखित मुहावरे को शुद्ध कीजिए। [1]

ईश्वर के घर देर है सबेर नहीं

(iii) निम्नलिखित वाक्य में रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए एक सटीक मुहावरे का चयन कीजिए। [1]

सुदामा को द्वारका में आया देख श्रीकृष्ण का उन्हें .... उनकी सहृदयता का परिचायक है।

(a) ईद का चाँद होना (b) आसमान के तारे तोड़ना

(c) पलकें बिछाना (d) सिर आँखों पर बिठाना

(iv) निम्नलिखित वाक्य के लिए एक सटीक मुहावरे का चयन कीजिए।

मुंशी प्रेमचन्द 'कथाशिल्पी' कहे जाते हैं क्योंकि उनका लेखन 'अति उत्तम' है। [1]

(a) टोपी उछालना (b) कलम तोड़ना

(c) कान काटना (d) तूती बोलना

(v) निम्नलिखित मुहावरे के सही अर्थ का चयन कीजिए।

पापड़ बेलना [1]

(a) पापड़ बनाना (b) मुसीबत उठाना

(c) खाना बनाना (d) पतली रोटी बनाना

SECTION B

LITERATURE– 40 Marks

Answer four questions from this Section on any three out of the four prescribed textbooks.

पाठ्यक्रम में निर्धारित चार पुस्तकों में से किन्हीं तीन पुस्तकों के चार प्रश्नों के उत्तर इस भाग से दीजिए।

गद्य संकलन (Gadya Sanklan)

Question 4

"परन्तु बुदेला शरणागत के साथ घात नहीं करता, इस बात को गाँठ बाँध लेना।"

(i) उक्त पंक्तियों से सम्बन्धित पाठ तथा रचनाकार का नाम लिखिए। [1]

(ii) यहाँ 'शरणागत' कौन है तथा उसे सहायता लेने की आवश्यकता क्यों हुई? [2]

(iii) उक्त पंक्तियों में किस 'घात' की बात की जा रही है? समझाकर लिखिए। [2]

(iv) कहानी में समाज की किस बुराई की ओर संकेत किया गया है? समाज से उस बुराई को दूर करने के लिए आप क्या करेंगे? कोई दो सुझाव दीजिए। [5]

Question 5 [10]

'हमारे समाज में एक बेटी को अपने मायके में हर सम्भव प्रयास करने के बावजूद बेटे के समान दर्जा नहीं मिलता और उसे 'पराया धन' माना जाता है, चाहे माता-पिता की नज़र में हो या भाई और भाभी की।' 'आउट साइडर' कहानी के संदर्भ में इस कथन की समीक्षा कीजिए।

Question 6 [10]

कोई दो उदाहरण देते हुए सभ्यता एवं संस्कृति में अन्तर बताइए। 'संस्कृति क्या है?' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि संस्कृति आदान-प्रदान से कैसे बढ़ती है?

काव्य मंजरी (Kavya Manjari)

Question 7

नर-समाज का भाग्य एक है, वह श्रम है, वह भुजबल है,
जिसके सम्मुख झुकी हुई पृथिवी, विनीत नभ-तल है।
जिसने श्रम-जल दिया, उसे पीछे मत रह जाने दो,
विजित प्रकृति से सबसे पहले उसको सुख पाने दो।

(i) प्रस्तुत पंक्तियों से सम्बन्धित कविता तथा कवि का नाम लिखिए। [1]

(ii) कवि ने 'नर समाज का भाग्य' किसे कहा है और क्यों? [2]

(iii) कवि की दृष्टि में सबसे सुख पाने का अधिकारी कौन है और क्यों? समझाकर लिखिए। [2]

(iv) 'उसे पीछे मत रह जाने दो'—पंक्ति के आधार पर बताइए कि यदि वह व्यक्ति पीछे रह गया तो क्या परिणाम होगा? किन्हीं दो तर्कों द्वारा अपनी बात स्पष्ट कीजिए। [5]

Question 8 [10]

'कबीर की साखियों में गुरु का महत्त्व, जीवात्मा-परमात्मा का सम्बन्ध तथा अज्ञानता रूपी अंधकार से ज्ञानरूपी प्रकाश की ओर अग्रसित करने का विधान मिलता है।' पठित साखियों के आधार पर इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

Question 9 [10]

'नागार्जुन प्रकृति-चित्रण के कुशल चितेरे कवि हैं। 'बादल को घिरते देखा है' कविता में उन्होंने प्राकृतिक सौंदर्य का अनुपत चित्रण किया है।' इस कथन की पुष्टि कविता के आधार पर कीजिए।

'सारा आकाश' (Saara Akash)

Question 10

"लेकिन मुसीबत सिर्फ रुपयों की ही तो नहीं है। उतना तो तुम्हें अभी भी मिलता है। असली मुसीबत तो यह है कि हमारे सपने बहुत ऊँचे हैं। भविष्य के नक्शे बिल्कुल अलग हैं।"

(i) प्रस्तुत पंक्तियों के वक्ता और श्रोता कौन हैं? [1]

(ii) उक्त पंक्तियों में किस सपने की बात की जा रही है? [2]

(iii) संयुक्त परिवार में युवकों की क्या स्थिति होती है? उपन्यास के संदर्भ में बताइए। [2]

(iv) उक्त संवाद के आलोक में वक्ता के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए। [5]

Question 11 [10]

'सारा आकाश' उपन्यास मध्यमवर्गीय संयुक्त परिवार के परस्पर तनाव, घुटन ओर यातना से उत्पन्न विकृतियों की कहानी है। इस कथन की व्याख्या करते हुए उपन्यास के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

Question 12 [10]

संयुक्त परिवार के बारे में शिरीष बाबू के जो विचार हैं उनसे आप कहाँ तक सहमत हैं? अपनी राय व्यक्त करते हुए शिरीष बाबू के चरित्र की कोई तीन विशेषताएँ लिखिए।

'आषाढ़ का एक दिन' (Aashad Ka Ek Din)

Question 13

"मेरे भीगे होने की चिन्ता मत करो।...जानती हो, इस तरह भीगना भी जीवन की महत्त्वाकांक्षा हो सकती है? वर्षों के बाद भीगा हूँ। अभी सूखना नहीं चाहता।"

(i) उक्त कथन किसने, किससे कहा? [1]

(ii) उक्त कथन किस संदर्भ में कहा गया है? [2]

(iii) इस कथन का अन्तर्निहित अर्थ स्पष्ट कीजिए। [2]

(iv) उक्त संवाद के आलोक में वक्ता के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए। [5]

Question 14 [10]

'विलोम आज के मानव की नियति को व्यक्त करने वाला एक सशक्त चरित्र है।'— उक्त कथन के आलोक में विलोम का चरित्र-चित्रण कीजिए तथा यह भी स्पष्ट कीजिए कि वह परम्परागत खलनायक से किस प्रकार भिन्न है?

Question 15 [10]

अपने ग्राम प्रांत में आने के बाद भी मल्लिका से न मिलने एवं राजकुमारी प्रियंगुमंजरी से विवाह कर लेने की बात जानकर भी मल्लिका के हृदय में कालिदास के लिए विषाद नहीं है। इसका क्या कारण हो सकता है? आपके अनुसार सच्चे प्रेम की परिभाषा क्या है? नाटक को आधार बनाकर लिखिए।

●●●

उत्तरमाला

SECTION A

LANGUAGE– 40 Marks

Answer 1.

(i) भारतीय भोजनः स्नेह, स्वाद और सुगंध का अनोखा संगम—भारत की समृद्ध संस्कृति और परंपराओं की तरह भारतीय भोजन भी विविधता से परिपूर्ण है। यह केवल भूख मिटाने का साधन नहीं, बल्कि संस्कृति, परंपरा और आत्मीयता का प्रतीक भी है। भारतीय भोजन की विशेषता इसमें प्रयुक्त मसालों, विधियों और क्षेत्रीय विविधताओं में निहित है, जो इसे दुनिया भर में लोकप्रिय बना रहे हैं। भारतीय व्यंजन स्वाद, सुगंध, रंग और पोषण का अद्‌भुत मिश्रण प्रस्तुत करते हैं, जिससे यह न केवल भारतीयों बल्कि विदेशी लोगों को भी आकर्षित कर रहा है।

भारतीय भोजन की प्रमुख विशेषताएँ

I. **मसालों का अनोखा संयोजन**—भारतीय व्यंजनों में मसालों का प्रयोग विशेष महत्त्व रखता है। हल्दी, धनिया, जीरा, इलायची, गरम मसाला, हींग, सरसों आदि मसाले न केवल भोजन को स्वादिष्ट बनाते हैं, बल्कि स्वास्थ्य के लिए भी लाभदायक होते हैं।

II. **क्षेत्रीय विविधता**

- उत्तर भारत में मक्खन, मलाई, और मसालेदार सब्ज़ियों का प्रयोग अधिक होता है। यहाँ का मुख्य भोजन रोटी, पराठा, दाल मखनी, छोले-भटूरे आदि होते हैं।
- दक्षिण भारतीय व्यंजनों में नारियल, इमली और चावल का अधिक प्रयोग होता है। डोसा, इडली, सांभर, उपमा यहाँ के लोकप्रिय व्यंजन हैं।
- पश्चिम भारत में गुजराती ढोकला, थेपला, महाराष्ट्र का वड़ा पाव, पूरन पोली और राजस्थान का दाल-बाटी-चूरमा प्रसिद्ध हैं।
- पूर्वोत्तर भारत में चावल और सब्ज़ियों का हल्का प्रयोग देखने को मिलता है। मोमो, थुकपा और फिश करी वहाँ के मुख्य व्यंजन हैं।

III. **संतुलित आहार और पोषण**—भारतीय भोजन में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, विटामिन और खनिजों का संतुलित मिश्रण होता है। दाल-चावल, रोटी-सब्ज़ी, दही, अचार और सलाद के साथ संतुलित आहार की परंपरा इसे स्वास्थ्य के लिए आदर्श बनाती है।

IV. **शाकाहारी और मांसाहारी दोनों के लिए उपयुक्त**—भारतीय भोजन की एक और विशेषता यह है कि इसमें शाकाहारी और मांसाहारी दोनों प्रकार के लोगों के लिए असीमित विकल्प मौजूद हैं। शाकाहारियों के लिए पालक पनीर, राजमा, छोले, सरसों का साग जैसी पौष्टिक चीजें उपलब्ध हैं, वहीं मांसाहारी लोगों के लिए बटर चिकन, बिरयानी, रोगन जोश जैसे लाजवाब व्यंजन हैं।

भारतीय व्यंजनों के विश्व स्तर पर लोकप्रिय होने के कारण

I. **स्वाद की विविधता**—भारतीय भोजन की सबसे बड़ी विशेषता इसकी स्वाद की विविधता है। मसालों का अनोखा मेल इसे अन्य व्यंजनों से अलग बनाता है। दुनिया भर के लोग भारतीय भोजन के तीखे, चटपटे और मीठे स्वाद का आनंद लेना पसंद करते हैं।

II. **स्वास्थ्यवर्धक तत्व**—भारतीय भोजन में प्रयुक्त हल्दी, अदरक, लहसुन, दही और मसाले रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में सहायक होते हैं। आज जब लोग हेल्दी फूड की ओर बढ़ रहे हैं, तब भारतीय व्यंजन उनके लिए आदर्श विकल्प बन रहे हैं।

III. **वैश्वीकरण और डिजिटल मीडिया**—आज इंटरनेट और सोशल मीडिया के कारण लोग दुनिया के विभिन्न व्यंजनों के बारे में जान पा रहे हैं। यूट्यूब, इंस्टाग्राम और फूड ब्लॉग्स के माध्यम से भारतीय खाना लोकप्रिय हो रहा है।

IV. **शाकाहारी भोजन की लोकप्रियता**—आजकल पश्चिमी देशों में शाकाहारी और वीगन डाइट का चलन बढ़ रहा है। भारतीय व्यंजन इस मामले में बेहद समृद्ध हैं, क्योंकि यहाँ शाकाहारी खाने के असंख्य विकल्प मौजूद हैं।

V. **भारतीय रेस्तरांओं की बढ़ती संख्या**—दुनियाभर में भारतीय रेस्तरांओं की संख्या बढ़ रही है। लंदन, न्यूयॉर्क, दुबई, टोक्यो और सिडनी जैसे शहरों में भारतीय व्यंजन बेहद पसंद किए जाते हैं।

निष्कर्ष—भारतीय भोजन केवल स्वाद की बात नहीं करता, यह संस्कृति, परंपरा और सेहत का भी प्रतीक है। मसालों के अद्‌भुत मेल, क्षेत्रीय विविधता, संतुलित आहार और धार्मिक-सांस्कृतिक महत्त्व इसे दुनिया में अनूठा बनाते हैं। वैश्वीकरण, स्वास्थ्य जागरूकता और सोशल मीडिया के कारण भारतीय व्यंजन पूरी दुनिया में तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। यह कहना गलत नहीं होगा कि आने वाले समय में भारतीय भोजन न केवल स्वाद की दृष्टि से, बल्कि सेहत और संतुलित आहार के रूप में भी वैश्विक पटल पर अपनी पहचान को और अधिक मजबूत करेगा।

(ii) दूसरों के दर्द को वही समझता है, जिसने स्वयं दर्द सहा हो भूमिकाः मनुष्य का जीवन सुख-दुःख, हँसी-आँसू और उतार-चढ़ाव से भरा हुआ है। जब हम स्वयं किसी कठिन परिस्थिति से गुजरते हैं, तभी हमें दूसरों की पीड़ा का वास्तविक अहसास होता है। जो व्यक्ति जीवन में संघर्ष और

कष्टों से गुजरा होता है, वही दूसरे व्यक्ति के दु:ख को गहराई से समझ सकता है। यह सत्य मैंने अपने व्यक्तिगत अनुभव से महसूस किया, जिसने मेरी सोच और संवेदनशीलता को और अधिक गहरा बना दिया।

मेरा अनुभव: यह घटना मेरे जीवन के उन क्षणों में से एक है जिसने मुझे दूसरों के दर्द को महसूस करने और उनकी मदद करने की प्रेरणा दी।

मैं जब दसवीं कक्षा में था, तब मेरे पिता की तबीयत अचानक बहुत खराब हो गई। वह एक छोटे व्यापारी थे और घर का पूरा खर्च उन्हीं की कमाई से चलता था। बीमारी के कारण उन्हें अपना काम बंद करना पड़ा, जिससे हमारे परिवार पर आर्थिक संकट आ गया। उस समय मेरी माँ ने सिलाई का काम शुरू किया और मैं भी अपनी पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने लगा।

हमारे घर की स्थिति ऐसी हो गई कि कभी-कभी भोजन के लिए भी संघर्ष करना पड़ता था। इस दौरान मैंने जाना कि अभाव और कठिनाइयाँ जीवन को कैसे प्रभावित करती हैं। स्कूल में पढ़ाई करते समय जब किसी दोस्त के पास महंगे पैन या नई किताबें होती थीं, तो मैं बस एक गहरी साँस लेकर रह जाता था।

कुछ महीनों बाद, जब मेरे पिता की तबीयत थोड़ी सुधरी और उन्होंने फिर से काम करना शुरू किया, तब जाकर हमारी स्थिति में सुधार आया। लेकिन इस कठिन दौर ने मेरे मन में एक गहरी छाप छोड़ दी।

इस अनुभव से मिली सीख:

I. दूसरों के दर्द को महसूस करने की क्षमता

- जब मैं आर्थिक संकट से गुजरा, तब मुझे एहसास हुआ कि गरीबी और कठिनाई का सामना करना कितना कठिन होता है।
- इसके बाद जब भी मैंने किसी को ज़रूरतमंद देखा, तो उसकी मदद करने की पूरी कोशिश की।

II. संवेदनशीलता और करुणा का विकास

- पहले मैं दूसरों की परेशानियों को उतनी गंभीरता से नहीं लेता था, लेकिन जब मैंने खुद संघर्ष किया, तब मुझे समझ आया कि हर व्यक्ति की अपनी लड़ाई होती है।
- अब अगर कोई छात्र किताबों या फीस के अभाव में परेशान होता है, तो मैं उसकी सहायता करने का प्रयास करता हूँ।

III. मदद की ताकत को समझना

- उस समय जब मेरे परिवार को मुश्किलों का सामना करना पड़ा, तब कुछ रिश्तेदारों और दोस्तों ने हमारी मदद की थी।
- इससे मैंने सीखा कि छोटी-छोटी मदद भी किसी के लिए बहुत बड़ी राहत बन सकती है।
- **निष्कर्ष:** यह सच है कि जिसने खुद दर्द सहा हो, वही दूसरों के दर्द को सही मायने में समझ सकता है। कठिनाइयाँ न केवल हमें मजबूत बनाती हैं, बल्कि हमारे भीतर दूसरों के प्रति सहानुभूति और करुणा भी विकसित करती हैं। मेरे इस अनुभव ने मुझे संवेदनशील और दयालु बनाया। अब मैं हमेशा कोशिश करता हूँ कि जरूरतमंदों की सहायता करूँ, चाहे वह आर्थिक रूप से हो या भावनात्मक रूप से।

इसलिए, जीवन की चुनौतियाँ हमें सिर्फ तकलीफ ही नहीं देतीं, बल्कि हमें बेहतर इंसान भी बनाती हैं। जब तक हम खुद संघर्षों से नहीं गुजरते, तब तक हमें दूसरों की परेशानियों का सही मायने में अहसास नहीं होता। यही कारण है कि सच्ची संवेदनशीलता और दया उन्हीं लोगों में होती है, जिन्होंने खुद जीवन के संघर्षों को महसूस किया होता है।

(iii) भारतीय प्रजातंत्र और मतदान का महत्त्व—भारत एक लोकतांत्रिक देश है, जहाँ जनता को अपनी सरकार चुनने का अधिकार प्राप्त है। प्रत्येक नागरिक को अठारह वर्ष की आयु पूर्ण करने के बाद मतदान करने का अधिकार मिल जाता है। यह अधिकार केवल एक सुविधा नहीं, बल्कि एक महत्त्वपूर्ण कर्तव्य भी है, क्योंकि एक सशक्त लोकतंत्र के निर्माण में ज़िम्मेदार मतदाता की भूमिका अनिवार्य होती है।

जब मैं मतदान करने योग्य हो जाऊँगा, तो अपने बहुमूल्य मत का सही प्रयोग करने के लिए कई महत्त्वपूर्ण बिंदुओं पर विचार करूँगा, ताकि एक योग्य और ईमानदार प्रतिनिधि का चयन किया जा सके।

मतदान करते समय ध्यान रखने योग्य बातें—

I. उम्मीदवार की ईमानदारी और चरित्र—किसी भी उम्मीदवार को चुनते समय सबसे महत्त्वपूर्ण बात उसका चरित्र और नैतिकता होती है। एक भ्रष्ट, स्वार्थी और आपराधिक पृष्ठभूमि वाला उम्मीदवार जनता की सेवा के बजाय अपने व्यक्तिगत लाभ को प्राथमिकता देगा।

- मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि जिस उम्मीदवार को मैं अपना मत दूँ, उसका कोई आपराधिक रिकॉर्ड न हो।
- उम्मीदवार की छवि ईमानदार, न्यायप्रिय और जनता के प्रति उत्तरदायी होनी चाहिए।

II. राजनीतिक दल की विचारधारा और नीतियाँ—भारत में चुनावी प्रक्रिया के तहत विभिन्न राजनीतिक दल अपने उम्मीदवार खड़े करते हैं। हर दल की अपनी विचारधारा और नीतियाँ होती हैं, जो देश की प्रगति और सामाजिक न्याय को प्रभावित करती हैं।

- मैं यह देखूँगा कि जिस दल से उम्मीदवार खड़ा हुआ है, वह समाज के सभी वर्गों के कल्याण के लिए काम करता है या नहीं।
- उसकी नीतियाँ राष्ट्रहित में हों, न कि केवल चुनावी लाभ के लिए।

III. शिक्षा और बौद्धिक योग्यता—एक नेता का शिक्षित होना बहुत ज़रूरी है, क्योंकि एक शिक्षित व्यक्ति बेहतर प्रशासन और नीति-निर्माण कर सकता है।

IV. जनता के प्रति जिम्मेदारी और सेवा भावना—एक सच्चा जनप्रतिनिधि वही होता है, जो जनता की परेशानियों को समझे और उनके समाधान के लिए तत्पर रहे।

V. भ्रष्टाचार मुक्त छवि—भारत में भ्रष्टाचार एक बड़ी समस्या है, और यदि हम भ्रष्ट नेताओं को ही चुनते रहेंगे, तो यह समस्या कभी खत्म नहीं होगी।

- मैं ऐसे उम्मीदवार को वोट दूँगा जिसकी छवि साफ़-सुथरी हो और जिसका नाम भ्रष्टाचार में न जुड़ा हो।
- अगर कोई उम्मीदवार जनता को लुभाने के लिए पैसे, उपहार या अन्य प्रलोभन देता है, तो वह लोकतंत्र के लिए घातक है, और मैं ऐसे व्यक्ति को वोट नहीं दूँगा।

VI. स्थानीय और राष्ट्रीय मुद्दों को समझने की क्षमता—एक अच्छा नेता वही होता है, जो अपने क्षेत्र की समस्याओं को समझे और उनके समाधान के लिए उचित कदम उठाए।

VII. सामाजिक समरसता और एकता को बढ़ावा देने वाला उम्मीदवार—आज के समय में धर्म, जाति, भाषा और क्षेत्रवाद के आधार पर समाज को बाँटने की राजनीति हो रही है, जो देश की एकता के लिए खतरनाक है।

- मैं ऐसे उम्मीदवार को समर्थन दूँगा, जो समाज को एकजुट करने का प्रयास करता हो, न कि उसे बाँटने का।

योग्य उम्मीदवार का चयन क्यों आवश्यक है?

यदि हम गलत व्यक्ति को चुनते हैं, तो उसके दुष्परिणाम पूरे समाज को भुगतने पड़ते हैं।

(1) भ्रष्ट नेता सत्ता में आकर जनता का शोषण करता है।

(2) अयोग्य प्रतिनिधि सही निर्णय नहीं ले पाता, जिससे विकास कार्य प्रभावित होते हैं।

(3) सांप्रदायिक और विभाजनकारी नेता समाज में नफ़रत फैलाते हैं।

यदि हम जागरूक मतदाता बनकर सही उम्मीदवार को चुनते हैं, तो इससे देश और समाज का विकास तेज़ी से होता है। एक ईमानदार और योग्य नेता जनता की समस्याओं को हल करने के लिए पूरी निष्ठा से काम करेगा और भारत को एक सशक्त राष्ट्र बनाएगा।

निष्कर्ष—मतदान केवल एक अधिकार नहीं, बल्कि हमारी जिम्मेदारी भी है। एक जागरूक मतदाता ही एक अच्छे लोकतंत्र की नींव रख सकता है। मैं जब मतदान करने जाऊँगा, तो इन सभी बातों को ध्यान में रखूँगा, ताकि मेरे मत का सही उपयोग हो और एक योग्य, ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ उम्मीदवार सत्ता में आए। यदि हर नागरिक इस सोच के साथ मतदान करे, तो निश्चित रूप से हमारा देश प्रगति के पथ पर तेजी से आगे बढ़ेगा।

(iv) कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और शिक्षा: आधुनिक युग की चुनौतियों का समाधान

पक्ष

वर्तमान युग तकनीकी क्रांति का युग है, जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता हर क्षेत्र में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। शिक्षा भी इससे अछूती नहीं रही है। AI का बढ़ता उपयोग विद्यार्थियों को न केवल बेहतर शिक्षा प्रदान कर रहा है बल्कि उन्हें आधुनिक युग की चुनौतियों का सामना करने में भी सक्षम बना रहा है। यह शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी, व्यक्तिगत और समावेशी बना रहा है, जिससे छात्र अपनी क्षमताओं का अधिकतम उपयोग कर सकते हैं।

AI के माध्यम से शिक्षा में सुधार

I. व्यक्तिगत शिक्षण

AI आधारित शिक्षण प्रणाली प्रत्येक विद्यार्थी की क्षमता, रुचि और गति के अनुसार सामग्री उपलब्ध कराती है। पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में सभी छात्रों को एक ही तरीके से पढ़ाया जाता है, जिससे कई बार कुछ छात्र पीछे रह जाते हैं। लेकिन AI तकनीक के माध्यम से विद्यार्थियों को उनकी सीखने की गति के अनुसार अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई जाती है।

II. शिक्षा में व्यापक पहुँच

AI आधारित शिक्षा प्रणाली भौगोलिक सीमाओं को पार कर रही है और दूर-दराज के क्षेत्रों में भी विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध करा रही है।

III. स्मार्ट कंटेंट और डिजिटल शिक्षण सामग्री

AI न केवल पारंपरिक पुस्तकों को डिजिटल रूप में उपलब्ध करा रहा है, बल्कि उन्हें इंटरएक्टिव और समझने में आसान भी बना रहा है।

IV. परीक्षा प्रणाली और मूल्यांकन में सुधार

पारंपरिक परीक्षा प्रणाली में अक्सर शिक्षक मैन्युअल मूल्यांकन में अधिक समय लगाते हैं, जिससे निष्पक्षता प्रभावित हो सकती है। AI आधारित ऑटोमेटेड मूल्यांकन सिस्टम इस समस्या का समाधान कर रहा है।

V. रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा

AI छात्रों को रचनात्मक सोच और नवाचार में सहायता करता है। विभिन्न AI टूल्स का उपयोग कर विद्यार्थी डिजिटल आर्ट, म्यूजिक, कोडिंग, गेम डेवलपमेंट और अन्य तकनीकी क्षेत्रों में नए प्रयोग कर सकते हैं।

VI. भाषायी बाधाओं को दूर करना

AI की मदद से भाषा अनुवाद प्रणाली शिक्षा को अधिक सुलभ बना रही है। अब छात्र विभिन्न भाषाओं में अध्ययन सामग्री प्राप्त कर सकते हैं।

VII. शिक्षकों की सहायता और प्रशासनिक कार्यों में सुधार

AI न केवल छात्रों की मदद करता है, बल्कि शिक्षकों को भी प्रशासनिक कार्यों से मुक्त कर उनके शिक्षण कार्य को अधिक प्रभावी बनाता है।

AI के कारण विद्यार्थियों को आधुनिक चुनौतियों से निपटने में सहायता

I. तेज़ी से बदलते कौशल की माँग— AI छात्रों को नए कौशल सिखाने में मदद करता है, जिससे वे आधुनिक नौकरियों के लिए तैयार हो सकते हैं।

II. आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास— AI आधारित शिक्षा छात्रों को स्वयं सीखने और निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है।

III. समस्या-समाधान क्षमता—AI की सहायता से छात्र जटिल समस्याओं को हल करने के लिए विश्लेषणात्मक और तार्किक सोच विकसित कर सकते हैं।

IV. वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करना— AI आधारित शिक्षा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनने में मदद करती है।

निष्कर्ष—AI का बढ़ता उपयोग शिक्षा में एक क्रांतिकारी बदलाव ला रहा है। यह न केवल विद्यार्थियों को व्यक्तिगत और सुलभ शिक्षा प्रदान कर रहा है, बल्कि उन्हें आधुनिक युग की चुनौतियों से निपटने के लिए भी तैयार कर रहा है। व्यक्तिगत शिक्षण, परीक्षा प्रणाली में सुधार, भाषायी बाधाओं को दूर करना और स्मार्ट कंटेंट जैसी सुविधाएँ इसे भविष्य की शिक्षा प्रणाली का एक अनिवार्य अंग बना रही हैं।

हालांकि, AI का सही दिशा में उपयोग करना आवश्यक है। विद्यार्थियों को केवल तकनीक पर निर्भर नहीं रहना चाहिए, बल्कि सृजनात्मकता, नैतिकता और तार्किक सोच को भी विकसित करना चाहिए। यदि AI का सही तरीके से उपयोग किया जाए, तो यह शिक्षा के क्षेत्र में नए अवसरों के द्वार खोल सकता है और विद्यार्थियों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार कर सकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और शिक्षा: आधुनिक युग की चुनौतियों का समाधान

विपक्ष

आज का युग तकनीकी प्रगति का युग है, जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का उपयोग हर क्षेत्र में बढ़ रहा है। शिक्षा क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। कई लोग यह मानते हैं कि AI विद्यार्थियों के लिए फायदेमंद है, लेकिन यदि गहराई से विचार किया जाए, तो यह उनके विकास में कई बाधाएँ भी उत्पन्न कर रहा है। AI का अत्यधिक उपयोग विद्यार्थियों के मानसिक, शारीरिक और बौद्धिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

I. आत्मनिर्भरता की कमी

AI के बढ़ते उपयोग से विद्यार्थी अपने ज्ञान, तर्क और समस्याओं के समाधान के लिए मशीनों पर निर्भर होते जा रहे हैं। पहले विद्यार्थी कठिन प्रश्नों को हल करने के लिए सोचते थे, किताबों में खोज करते थे और अपनी बुद्धि का उपयोग करते थे, लेकिन अब AI आधारित टूल्स जैसे चैटबॉट्स और ऑनलाइन सॉल्वर उनके लिए तुरंत उत्तर दे देते हैं। इससे उनकी सृजनात्मक और विश्लेषणात्मक क्षमताओं का विकास बाधित हो रहा है।

II. रटने की प्रवृत्ति को बढ़ावा

AI आधारित शिक्षा कई बार विद्यार्थियों को केवल तथ्यों को रटने की आदत डाल देती है। जब उत्तर तुरंत उपलब्ध होते हैं, तो वे गहराई से विषय को समझने की कोशिश नहीं करते। इससे उनकी तार्किक सोच और गहन अध्ययन की प्रवृत्ति खत्म होती जा रही है।

III. व्यक्तिगत मेहनत और परिश्रम में कमी

AI के कारण विद्यार्थी पहले की तुलना में कम मेहनत करने लगे हैं। गृहकार्य, निबंध लेखन और गणितीय समस्याओं को हल करने के लिए वे AI टूल्स का उपयोग करते हैं, जिससे उनकी स्वयं की मेहनत और सीखने की प्रक्रिया बाधित होती है। इससे उनमें आलस्य और लापरवाही बढ़ सकती है, जो उनके भविष्य के लिए घातक साबित हो सकता है।

IV. नैतिक और शैक्षिक मूल्यों पर प्रभाव

AI के कारण विद्यार्थियों में अनुशासन और नैतिकता की भावना कम हो रही है। अब वे परीक्षाओं में नकल करने के लिए AI टूल्स का उपयोग करने लगे हैं। इससे उनके नैतिक मूल्यों का पतन हो सकता है। अगर विद्यार्थी मेहनत किए बिना सफलता पाने की आदत डाल लेंगे, तो यह उनके व्यक्तित्व निर्माण के लिए हानिकारक होगा।

V. मानसिक और सामाजिक विकास में बाधा

AI आधारित शिक्षा विद्यार्थियों को स्क्रीन पर अधिक समय बिताने के लिए प्रेरित कर रही है, जिससे वे सामाजिक गतिविधियों से दूर होते जा रहे हैं। पहले विद्यार्थी अपने शिक्षकों और सहपाठियों के साथ संवाद करके सीखते थे, जिससे उनका सामाजिक विकास होता था। लेकिन AI के अधिक प्रयोग से वे संवाद कौशल और भावनात्मक बुद्धिमत्ता खोते जा रहे हैं।

VI. गलत सूचनाओं का खतरा

AI टूल्स कई बार गलत और अपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। यदि विद्यार्थी आँख मूंदकर AI पर निर्भर हो जाएँ, तो वे गलत तथ्यों को सच मान सकते हैं, जिससे उनकी शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

निष्कर्ष—यह सत्य है कि AI ने शिक्षा को सरल और सुलभ बना दिया है, लेकिन इसका अत्यधिक उपयोग विद्यार्थियों के आत्मनिर्भरता, रचनात्मकता, नैतिकता और मानसिक विकास के लिए घातक साबित हो सकता है। विद्यार्थी यदि केवल AI पर निर्भर रहेंगे, तो उनकी स्वयं सीखने की क्षमता कम हो जाएगी। अत: AI को एक सहायक उपकरण के रूप में प्रयोग किया जाना चाहिए, न कि पूर्ण रूप से उस पर निर्भर हो जाना चाहिए। अन्यथा, विद्यार्थी आधुनिक युग की चुनौतियों का सामना करने में असमर्थ रहेंगे।

(v) साइकिल रैली: एक अनोखा अनुभव

हमारे विद्यालय में समय-समय पर विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इसी क्रम में इस वर्ष "स्वस्थ जीवन, स्वच्छ पर्यावरण" विषय पर एक साइकिल रैली का आयोजन किया गया। इस रैली का उद्देश्य साइकिल चलाने के लाभों के प्रति जागरूकता फैलाना और स्वास्थ्य के प्रति लोगों को प्रेरित करना था। जब विद्यालय प्रशासन ने इसकी घोषणा की, तो मैं और मेरे मित्रों ने उत्साहपूर्वक इसमें भाग लेने का निर्णय लिया।

साइकिल रैली के लिए हमें कई प्रकार की तैयारियाँ करनी पड़ीं। सबसे पहले हमने अपनी साइकिलों की अच्छी तरह से जांच

और मरम्मत करवाई ताकि किसी प्रकार की तकनीकी समस्या न आए। हमने अपनी साइकिलों को सजाने के लिए रंगीन झंडियाँ और पोस्टर बनाए, जिन पर स्वास्थ्य और पर्यावरण से जुड़े नारे लिखे गए थे, जैसे—

"साइकिल चलाओ, स्वस्थ रहो"

"पर्यावरण बचाएँ, प्रदूषण घटाएँ"

इसके अलावा, हमने हेलमेट और घुटनों के सुरक्षा गार्ड भी खरीदे ताकि सुरक्षा के सभी मानकों का पालन किया जा सके। विद्यालय ने हमें रैली की मार्गदर्शिका दी, जिसमें रैली का मार्ग, समय और अन्य आवश्यक निर्देश दिए गए थे।

रैली के दिन हम सभी विद्यालय के खेल मैदान में एकत्रित हुए। वहाँ पर हमारे प्रधानाचार्य जी ने हमें साइकिल चलाने के लाभों के बारे में बताया और हमें सुरक्षित रूप से रैली निकालने की सलाह दी।

रैली विद्यालय से शुरू होकर शहर की विभिन्न सड़कों और प्रमुख स्थानों से होकर गुजरी। हमने पूरे जोश और उत्साह के साथ स्वास्थ्य, व्यायाम और पर्यावरण संरक्षण के नारे लगाए। हमारे साथ पुलिस और स्वयंसेवक भी थे, जो यातायात को नियंत्रित कर रहे थे ताकि हम आसानी से आगे बढ़ सकें।

रास्ते में कई लोग हमें देख रहे थे और कुछ तो हमारे संदेशों से प्रेरित होकर साइकिल चलाने के लाभों पर चर्चा करने लगे। कई छोटे बच्चे और बुज़ुर्ग हमें देखकर खुश हो गए और उन्होंने भी साइकिल चलाने की प्रेरणा ली। यह देखकर हमें बहुत खुशी हुई कि हमारे प्रयास से लोग सचेत हो रहे थे।

लगभग 10 किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद, रैली का समापन विद्यालय प्रांगण में हुआ। वहाँ सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र दिए गए और हमें सम्मानित किया गया।

इस रैली ने न केवल मेरे भीतर स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाई, बल्कि मुझे टीमवर्क, अनुशासन और आत्म-विश्वास का भी अनुभव कराया। हमने जाना कि साइकिल चलाना न केवल हमारे शरीर के लिए फायदेमंद है, बल्कि यह पर्यावरण को भी स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त रखने में सहायक है।

यह रैली मेरे लिए एक अविस्मरणीय अनुभव रही और मैं भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रमों में भाग लेना चाहूँगा। अब मैंने यह निश्चय किया है कि जहाँ तक संभव हो, मैं छोटी दूरी के लिए साइकिल का ही प्रयोग करूँगा। इससे न केवल मेरा स्वास्थ्य सुधरेगा, बल्कि मैं पर्यावरण संरक्षण में भी अपना योगदान दे सकूँगा।

(vi) (a) 'अच्छे-बुरे की पहचान विपत्ति के समय ही होती है।'

गाँव में रवि नाम का एक युवक रहता था। वह बहुत मेहनती था और अपनी ईमानदारी के लिए जाना जाता था। उसके पास खेती-बाड़ी की थोड़ी सी ज़मीन थी, जिससे वह अपना और अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। रवि के कई दोस्त थे, जो हमेशा उसकी उदारता की प्रशंसा करते थे और उससे मित्रता बनाए रखना चाहते थे। उसे लगता था कि उसके दोस्त भी उसे उतना ही पसंद करते हैं, जितना वह उन्हें करता है।

रवि का जीवन अच्छे से चल रहा था, लेकिन एक दिन अचानक उसके खेतों में भयंकर तूफान और ओलावृष्टि हो गई। उसकी सारी फसल नष्ट हो गई और वह कर्ज में डूब गया। गाँव के लोग उसके दुख को देखकर सहानुभूति जताने लगे, लेकिन उसे असली समर्थन की जरूरत थी।

रवि ने सबसे पहले अपने उन दोस्तों से मदद माँगी, जो हमेशा उसकी दोस्ती की कसमें खाते थे। लेकिन किसी ने बहाना बनाया कि उनके पास पैसे नहीं हैं, तो किसी ने कहा कि वे पहले से ही आर्थिक तंगी में हैं। कुछ ने तो उससे मिलना ही बंद कर दिया। रवि को यह समझ आने लगा कि जो लोग अच्छे समय में उसके साथ थे, वे बुरे समय में दूर हो गए।

अब रवि को बहुत चिंता होने लगी कि वह अपना घर और जमीन कैसे बचाएगा। उसके अपने कहे जाने वाले दोस्तों ने उसे अकेला छोड़ दिया था। जब रवि पूरी तरह निराश हो चुका था, तभी गाँव के रामू काका उसके पास आए। वे गाँव के एक बुजुर्ग और साधारण किसान थे। उन्होंने रवि की हालत देखी और बोले, "बेटा, मैंने सुना है कि तुम्हारे दोस्त तुम्हारी मदद नहीं कर रहे। पर याद रखो, सच्चे रिश्ते मुश्किल समय में ही परखे जाते हैं।"

रामू काका ने अपनी बचत के कुछ पैसे रवि को दिए और कहा कि जब उसका समय अच्छा हो जाए, तब वह पैसे लौटा सकता है। इसके अलावा, कुछ और गरीब किसानों ने भी रवि की मदद के लिए हाथ बढ़ाया। उन्होंने उसे बीज और खाद उपलब्ध करवाई ताकि वह दोबारा खेती शुरू कर सके। रवि ने मेहनत से काम किया और अगली फसल में उसे अच्छा मुनाफा हुआ। उसने धीरे-धीरे अपना कर्ज चुकता किया और रामू काका का उधार भी लौटा दिया।

सीख और निष्कर्ष

अब रवि को समझ आ गया था कि अच्छे और बुरे लोगों की पहचान विपत्ति के समय ही होती है। जो लोग सिर्फ अच्छे समय में साथ रहते हैं, वे सच्चे मित्र नहीं होते। विपत्ति में जो बिना स्वार्थ के साथ खड़ा रहे, वही असली अपना होता है। इस घटना के बाद, रवि ने अपने दिखावटी दोस्तों से दूर रहना सीख लिया और सच्चे लोगों को अपनी जिंदगी में प्राथमिकता देने का संकल्प लिया।

(b) .... और इस तरह उन्होंने मुझे माफ कर दिया।

'गर्मी की छुट्टियाँ चल रही थीं। मैं अपने दादा-दादी के गाँव आया हुआ था। गाँव की मिट्टी, हरे-भरे खेत और आम के पेड़ों से घिरा वह माहौल मेरे लिए नया था। लेकिन सबसे खास बात थी मोहन काका का आम का बगीचा।

मोहन काका गाँव के सबसे ईमानदार और मेहनती व्यक्ति थे। उनका आम का बगीचा पूरे गाँव में प्रसिद्ध था, लेकिन वह किसी को भी बिना पूछे आम तोड़ने नहीं देते थे। मैंने कई बार सुना था कि अगर कोई चोरी से आम तोड़ने की कोशिश करता, तो वे बहुत नाराज़ हो जाते थे।

एक दिन मैं अपने दोस्तों के साथ बगीचे के पास से गुजर रहा था। आम के पेड़ों पर लदे पीले-पीले रसीले आम देखकर मेरे

मन में लालच आ गया। मैंने दोस्तों से कहा, "बस एक आम तोड़ने में क्या हर्ज है? वैसे भी पेड़ पर इतने सारे आम हैं।"

सभी ने सहमति जताई। हम दीवार पर चढ़े और जल्दी से कुछ आम तोड़ लिए। जैसे ही हम वहाँ से भागने लगे, अचानक पीछे से एक कड़कती आवाज़ आई—

"कौन है वहाँ?"

हम सब घबरा गए। मैंने पीछे मुड़कर देखा—मोहन काका खड़े थे। उनकी आँखों में गुस्सा था। मेरे दोस्त डर के मारे भाग गए, लेकिन मैं पकड़ा गया।

मोहन काका ने मुझसे सख्ती से पूछा, "तुम्हें पता नहीं कि बिना पूछे किसी की चीज़ लेना चोरी कहलाता है?"

मुझे बहुत शर्म आई। मैंने सिर झुका लिया और धीरे से कहा, "माफ़ कर दीजिए काका, मुझसे गलती हो गई।"

मोहन काका ने गहरी साँस ली और बोले, "माफ़ी माँगने से ही गलती ठीक नहीं होती। अगर तुम सच में शर्मिंदा हो, तो इसका प्रायश्चित करो।"

मैंने सिर हिलाया, "हाँ काका, मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ।"

उन्होंने मुझे अगले एक हफ्ते तक बगीचे की देखभाल करने और गिरे हुए आमों को इकट्ठा करने का काम सौंपा। यह मेरे लिए एक सजा की तरह था, लेकिन धीरे-धीरे मैंने इस काम में आनंद लेना शुरू कर दिया। मैंने जाना कि पेड़ लगाना और उनकी देखभाल करना कितना कठिन होता है।

एक हफ्ते बाद, जब मैंने अपना काम पूरा कर लिया, तो मोहन काका मुस्कुराए और मेरे हाथ में एक टोकरी भरकर पके आम रख दिए। उन्होंने प्यार से मेरे सिर पर हाथ फेरा और कहा, "अब तुम्हें आम चोरी करने की जरूरत नहीं, ये तुम्हारी मेहनत का फल है।"

मैंने शर्मिंदगी से उनकी तरफ देखा और कहा, "अब मैं कभी भी किसी की चीज बिना पूछे नहीं लूँगा।" और इस तरह उन्होंने मुझे माफ कर दिया।

Answer 2.

(i) महाकवि कालिदास बहुत बड़े विद्वान थे और उन्हें शास्त्रार्थ में कोई हरा नहीं पा रहा था। इसलिए उन्हें अपने यश, सम्मान और प्रतिष्ठा का घमंड हो गया था।

(ii) कालिदास के द्वारा अपना परिचय मेहमान बताए जाने के जबाव में वृद्धा ने कहा कि तुम मेहमान नहीं हो सकते हो क्योंकि संसार में दो ही मेहमान हैं पहला धन और दूसरा यौवन क्योंकि उनके जाने में समय नहीं लगता। पुन: कालिदास ने अपने परिचय में बताया कि वह सहनशील हैं इसके उत्तर में वृद्धा ने कहा कि तुम सहनशील भी नहीं हो सकते क्योंकि इस संसार में एक पृथ्वी ही सहनशील है क्योंकि वह पाप-पुण्य सहती है और उसकी छाती चीर कर बीज बो देने से अनाज के भंडार उगते हैं और दूसरे वृक्ष सहनशील हैं क्योंकि उन्हें पत्थर मारने पर भी वे मीठे फल देते हैं।

(iii) माता सरस्वती को एक वृद्धा का स्वांग करना पड़ा और उनके स्वांग के पीछे का मकसद था कि कालिदास को अपनी यश, प्रतिष्ठा और विद्वता के कारण बहुत अहंकार हो गया था। इसीलिए कालिदास के अहंकार को तोड़ने के लिए और उन्हें सही रास्ते पर लाने के लिए माता सरस्वती जी ने एक वृद्धा का स्वांग किया और उन्होंने बहुत सारे प्रश्न पूछकर कालिदास को समझाया कि तुम अहंकार बेकार में कर रहे हो। अंत में कालिदास को अपने ज्ञान की निस्सारता का ज्ञान हुआ और उनकी आँखें खुल गई।

(iv) (a) (2) अहंकार का भाव

(b) (4) व्यक्ति ने अपना परिचय नहीं दिया था।

(c) (3) कालिदास बहुत चर्चित हैं।

(v) (a) (1) कालिदास की आँखें खोलने के लिए

(b) (4) विवशता और व्याकुलता भरी

(c) (3) वृद्धा के तर्कों से वे निरुत्तर हो गए थे।

Answer 3.

(A) (i) अब और स्पष्टीकरण देने की आवश्यकता नहीं है।

(ii) हमें हमेशा दूर के ढोल सुहाने लगते हैं।

(iii) (b) शरीर में ताकत होनी चाहिए।

(iv) (c) मेरे को माँ के साथ घर जाना है।

(v) (a) बेड़ियाँ

(B) (i) गज भर की छाती होना - साहसी होना।

वाक्य प्रयोग-सोहन की गज भर की छाती है तभी तो वह अकेले ही चार पहलवानों को पछाड़ देता है।

(ii) ईश्वर के घर देर है अंधेर नहीं।

(iii) (c) पलकें बिछाना

(iv) (b) कलम तोड़ना

(v) (b) मुसीबत उठाना

SECTION B

LITERATURE–40 Marks

Answer 4.

(i) उक्त पंक्तियों से सम्बन्धित पाठ 'शरणागत' है और उसके रचनाकार हैं वृंदावन लाल वर्मा।

(ii) यहाँ शरणागत कसाई था और उसे सहायता लेने की आवश्यकता इसलिए हुई क्योंकि वह अपनी पत्नी के साथ था और रात बहुत हो गई थी।

(iii) उक्त पंक्तियों में इस घात की बात की जा रही है कि कुछ डाकूओं ने कसाई को घेर लिया था। उन डाकूओं के सरदार ठाकुर जी थे जिनके यहाँ उसने शरण ली थी।

(iv) कहानी में समाज की उस बुराई की ओर संकेत किया गया है कि कुछ लोग अपने शरण में आए हुए लोगों को ठगते हैं। समाज से इस बुराई को दूर करने के लिए मैं सभी लोगों से यह आग्रह करूँगा कि शरणागत की रक्षा करें न कि उसका अहित अर्थात् शरणागत को धोखा नहीं देना चाहिए।

Answer 5.

'आउटसाइडर' कहानी भारतीय समाज में बेटी के स्थान और उसकी स्थिति को दर्शाने वाली एक महत्त्वपूर्ण रचना है। यह कहानी इस तथ्य को उजागर करती है कि भले ही बेटी को मायके में स्नेह और अधिकार दिया जाता हो, लेकिन समाज में उसे 'पराया धन' मानने की मानसिकता बनी रहती है। वह अपने ही जन्मस्थान में एक बाहरी व्यक्ति की तरह महसूस करती है, जिसे पूर्ण अधिकार कभी नहीं मिलता।

बेटी की स्थिति और 'आउटसाइडर' कहानी की प्रासंगिकता

I. **मायके में बेटी की सीमित भूमिका**—कहानी की नायिका जब अपने मायके लौटती है, तो वह यह अनुभव करती है कि अब वह वहां पहले जैसी नहीं रही। उसे प्रेम तो मिलता है, लेकिन वह एक अस्थायी मेहमान की तरह महसूस करती है। विवाह के बाद उसके घर में भाई-भाभी का अधिकार बढ़ चुका होता है और उसके निर्णय मायने नहीं रखते। यह इस बात का संकेत है कि विवाह के बाद बेटी का मायके में पूर्ण रूप से अधिकार नहीं रह जाता, जबकि बेटे को पारिवारिक उत्तराधिकारी माना जाता है।

II. **बेटी का 'पराया धन' समझा जाना**—हमारे समाज में बेटी को शुरू से यह सिखाया जाता है कि वह ससुराल जाने के लिए जन्मी है और मायका केवल उसका जन्मस्थान है, अधिकार क्षेत्र नहीं। जब वह शादी के बाद मायके आती है, तो उसे एक अस्थायी अतिथि की तरह देखा जाता है। परिवार के महत्त्वपूर्ण निर्णयों में उसकी राय की कोई विशेष भूमिका नहीं होती। 'आउटसाइडर' कहानी की नायिका भी इसी भावना से गुजरती है।

III. **भाई और भाभी का व्यवहार**—कई मामलों में भाई-भाभी बेटी को उसके मायके में पूरी तरह स्वीकार नहीं करते। कहानी में भी यह झलकता है कि भाई और भाभी के पास मायके के मामलों में निर्णय लेने का पूरा अधिकार होता है, जबकि बेटी को परोक्ष रूप से बाहर का व्यक्ति समझा जाता है। भले ही बेटी का मायके से भावनात्मक लगाव बना रहता है, लेकिन संपत्ति और अधिकार के मामलों में उसे अक्सर हाशिए पर रखा जाता है।

IV. **माता-पिता की असहायता**—माता-पिता अपनी बेटी से प्रेम तो करते हैं, लेकिन समाज की बनी-बनाई सोच के कारण वे भी उसे बेटे जितना अधिकार नहीं दे पाते। वे सामाजिक व्यवस्था से बंधे होते हैं, जहाँ बेटा घर का वारिस माना जाता है और बेटी पराई। वे बेटी को भावनात्मक सहारा तो देते हैं, लेकिन जब संपत्ति, उत्तराधिकार, या घर की देखभाल की बात आती है, तो बेटा ही प्राथमिकता में रहता है।

समाज में बेटा-बेटी के भेदभाव की समीक्षा

I. **सांस्कृतिक मानसिकता**—सदियों से बेटी को पराया धन समझने की मानसिकता बनी हुई है, जिससे उसे मायके में पूर्ण अधिकार नहीं मिलते।

II. **कानूनी अधिकार और सामाजिक सच्चाई**—भले ही कानून बेटियों को संपत्ति में अधिकार देता है, लेकिन व्यवहार में उन्हें आज भी इसे प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना पड़ता है।

III. **भावनात्मक लगाव और सामाजिक सीमाएँ**—बेटी का मायके से गहरा भावनात्मक रिश्ता होता है, लेकिन समाज उसे एक स्थायी सदस्य के रूप में स्वीकार नहीं करता।

Answer 6.

सभ्यता और संस्कृति अक्सर एक-दूसरे के समानार्थी समझे जाते हैं, लेकिन इन दोनों में महत्त्वपूर्ण अंतर होता है।

विषय	सभ्यता	संस्कृति
परिभाषा	मनुष्य के भौतिक विकास से संबंधित है, जैसे तकनीक, विज्ञान, भवन, परिवहन आदि।	मनुष्य के विचारों, परंपराओं, मान्यताओं, भाषा, कला और साहित्य से संबंधित है।
स्वरूप	यह बाह्य रूप से दिखाई देती है।	यह आंतरिक होती है और व्यक्ति के आचरण, मूल्यों व दृष्टिकोण में परिलक्षित होती है।
परिवर्तन	समय के साथ तेज़ी से बदलती है।	धीरे-धीरे परिवर्तनशील होती है।
उदाहरण	आधुनिक तकनीक, ऊँची-ऊँची इमारतें, यातायात के साधन।	लोकगीत, त्योहार, पारंपरिक पहनावा, नैतिक मूल्य।

उदाहरण:

- **सभ्यता का उदाहरण:** मोबाइल फ़ोन और इंटरनेट आधुनिक सभ्यता का हिस्सा हैं, जो भौतिक प्रगति को दर्शाते हैं।
- **संस्कृति का उदाहरण:** किसी समाज की भाषा, पारंपरिक नृत्य, साहित्य और धार्मिक मान्यताएँ उसकी संस्कृति का हिस्सा होती हैं।

संस्कृति क्या है?

संस्कृति मानव जीवन के उन समस्त पहलुओं का समावेश करती है जो व्यक्ति के मानसिक, सामाजिक और नैतिक विकास से जुड़े होते हैं। यह जीवन जीने की शैली को दर्शाती है और इसमें समाज की परंपराएँ, मूल्य, भाषा, कला, साहित्य, धर्म और आचार-विचार शामिल होते हैं।

संस्कृति के प्रमुख तत्व:

I. **भाषा**—किसी समाज की भाषा उसकी संस्कृति का मुख्य आधार होती है।

II. **कला और साहित्य**—लोकगीत, नृत्य, मूर्तिकला और साहित्य संस्कृति को परिभाषित करते हैं।

III. धर्म और परंपराएँ—पूजा-पद्धति, रीति-रिवाज और मान्यताएँ किसी समाज की संस्कृति को आकार देते हैं।

IV. नैतिक मूल्य—सत्य, अहिंसा, करुणा, सहिष्णुता जैसी नैतिकताएँ संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

संस्कृति आदान-प्रदान से कैसे बढ़ती है?

संस्कृति स्थिर नहीं होती, बल्कि यह समय के साथ बदलती और विकसित होती रहती है। विभिन्न संस्कृतियों के संपर्क में आने से उनमें नया समावेश होता है और वे अधिक समृद्ध होती हैं।

संस्कृति के बढ़ने के प्रमुख कारण:

I. व्यापार और आवागमन—विभिन्न देशों और समाजों के बीच व्यापार होने से एक-दूसरे की परंपराएँ, खान-पान और वेशभूषा का प्रभाव बढ़ता है।

• उदाहरण: भारतीय मसाले और योग आज पूरी दुनिया में लोकप्रिय हैं।

II. युद्ध और विजय—इतिहास में विजेता और पराजित सभ्यताओं के बीच संस्कृति का आदान-प्रदान हुआ है।

• उदाहरण: मुगल काल में भारतीय वास्तुकला और फारसी कला का मिश्रण हुआ।

III. धर्म और आध्यात्मिकता—विभिन्न धर्मों और विचारधाराओं ने एक-दूसरे को प्रभावित किया है।

• उदाहरण: बौद्ध धर्म भारत से चीन, जापान और दक्षिण-पूर्व एशिया में फैला।

IV. वैज्ञानिक और तकनीकी विकास—वैज्ञानिक खोजों और औद्योगिकीकरण से संस्कृतियों में नए तत्व जुड़े।

• उदाहरण: आधुनिक पश्चिमी संगीत और फैशन भारतीय युवाओं पर प्रभाव डाल रहा है, जबकि भारतीय योग और आयुर्वेद पश्चिमी देशों में लोकप्रिय हो रहे हैं।

V. संचार और वैश्वीकरण—इंटरनेट और सोशल मीडिया के कारण दुनिया भर की संस्कृतियाँ एक-दूसरे से प्रभावित हो रही हैं।

Answer 7.

(i) प्रस्तुत पंक्तियों से सम्बन्धित कविता 'उद्यमी नर' है और इसके कवि राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं।

(ii) नर समाज का भाग्य उसे कहा गया है जो मेहनती व्यक्ति है क्योंकि मेहनती व्यक्ति ने ही अपने परिश्रम के बल पर प्रकृति और संसार पर विजय पायी है। मेहनती व्यक्ति को ही संसार में सबसे पहले सुख पाने का अधिकार है और उसके सामने ही पृथ्वी झुक सकती है।

(iii) कवि की दृष्टि में मेहनती व्यक्ति को ही संसार में सबसे पहले सुख पाने का अधिकार है और उसके सामने ही पृथ्वी झुक सकती है क्योंकि मेहनती व्यक्ति ने ही अपने परिश्रम के बल पर प्रकृति और संसार पर विजय किया है।

(iv) 'उसे पीछे मत रह जाने दो' से कवि का आशय है कि समाज में जो भी शोषित, वंचित और पिछड़ा वर्ग है उसे पिछड़ा ही न रहने दिया जाए; बल्कि शासन और समाज के द्वारा उसे भी समाज की मुख्य धारा से जोड़ा जाए यदि वह व्यक्ति पीछे रह गया, तो उसके लिए कई नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं। "उसे पीछे मत रह जाने दो" यह पंक्ति प्रेरणा देती है कि व्यक्ति को हमेशा आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए, अन्यथा वह जीवन की दौड़ में पिछड़ सकता है। "**उद्यमी नर**" पाठ के आधार पर, यदि कोई व्यक्ति आलस्य या भय के कारण पीछे रह जाता है, तो उसे सफलता प्राप्त नहीं होगी।

पिछड़े वर्ग के पीछे रहने पर सम्भावित परिणाम:

I. अवसरों से वंचित रह जाना—जो व्यक्ति समय पर प्रयास नहीं करता, वह उपलब्ध अवसरों का लाभ नहीं उठा पाता।

II. प्रतिस्पर्धा में पिछड़ जाना—समाज और कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए परिश्रम आवश्यक है।

III. आत्मविश्वास की कमी—जब व्यक्ति बार-बार असफल होता है, तो उसका आत्मविश्वास कमजोर हो सकता है।

"उद्यमी नर" पाठ हमें सिखाता है कि जो व्यक्ति कठिन परिश्रम और निरंतर प्रयास करता है, वही सफल होता है। इसलिए, पीछे रहने की बजाय आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए।

Answer 8.

कबीर की साखियों में गुरु, जीवात्मा-परमात्मा सम्बन्ध एवं ज्ञान का महत्त्व—कबीरदास जी भारतीय संत परम्परा के महान् कवि थे, जिन्होंने अपनी साखियों के माध्यम से जीवन के गूढ़ रहस्यों को सरल भाषा में प्रस्तुत किया। उनकी साखियों में गुरु का महत्व, जीवात्मा और परमात्मा का सम्बन्ध, तथा अज्ञानता से ज्ञान की ओर अग्रसर होने का संदेश प्रमुख रूप से मिलता है।

I. गुरु का महत्त्व—कबीरदास जी ने गुरु को परमात्मा से भी ऊँचा स्थान दिया है। उनके अनुसार, गुरु ही वह प्रकाशपुंज है जो अज्ञान रूपी अंधकार को दूर कर ज्ञान की ओर ले जाता है। उन्होंने गुरु को जीवन का मार्गदर्शक माना है, जो शिष्य को सत्य का बोध कराता है। उनकी प्रसिद्ध साखी है:

"गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपनो, गोविंद दियो बताय॥"

इस साखी में कबीरदास जी स्पष्ट करते हैं कि यदि गुरु और गोविंद (भगवान) एक साथ खड़े हों, तो पहले गुरु के चरणों में शीश झुकाना चाहिए क्योंकि गुरु ही हमें गोविंद तक पहुँचने का मार्ग दिखाता है।

गुरु की कृपा से ही मनुष्य सही और गलत का भेद समझ पाता है तथा आध्यात्मिक उन्नति कर सकता है। बिना गुरु के आत्मज्ञान सम्भव नहीं है।

II. जीवात्मा-परमात्मा का सम्बन्ध—कबीरदास जी की साखियों में आत्मा और परमात्मा के बीच के सम्बन्ध को दर्शाया गया है। उनके अनुसार, आत्मा परमात्मा का ही अंश है, लेकिन माया और अज्ञान के कारण वह परमात्मा से दूर हो जाती है। वे कहते हैं कि जब आत्मा माया के बंधनों से मुक्त हो जाती है, तो परमात्मा से उसका मिलन सम्भव होता है।

"जल में कुंभ, कुंभ में जल है, बाहर भीतर पानी।
फूटा कुंभ जल जल ही समाना, यह तथ कहै ज्ञानी॥"

इस साखी में कबीर ने जीवात्मा और परमात्मा के सम्बन्ध को पानी और घड़े के माध्यम से समझाया है। जब तक घड़ा (शरीर) है, तब तक जल (आत्मा) उसमें सीमित रहता है, लेकिन घड़ा फूटने के बाद जल जल में समा जाता है, अर्थात् आत्मा परमात्मा में विलीन हो जाती है।

कबीरदास जी के अनुसार, यह संसार एक भ्रमजाल है, जिसमें बाहर निकलने के लिए व्यक्ति को आत्मज्ञान की आवश्यकता होती है। जब व्यक्ति माया से मुक्त होकर सत्य की खोज करता है, तभी उसे परमात्मा का साक्षात्कार होता है।

III. **अज्ञानता से ज्ञान की ओर यात्रा**—कबीरदास जी का मानना था कि अज्ञानता ही मनुष्य के दुखों का कारण है। जब तक व्यक्ति अज्ञान के अंधकार में भटकता रहता है, तब तक वह जीवन के वास्तविक उद्देश्य को नहीं समझ पाता। उनकी एक प्रसिद्ध साखी है:

"माला फेरत जुग गया, फिरा न मन का फेर।
कर का मन का डार दे, मन का मनका फेर॥"

इसमें कबीर ने बताया कि केवल बाहरी दिखावे से आत्मज्ञान नहीं मिलता। वास्तविक ज्ञान तभी सम्भव है जब मनुष्य अपने भीतर झांके और आत्मचिंतन करे।

अज्ञानता को दूर करने के लिए सत्संग, गुरु की कृपा और आत्मचिंतन आवश्यक है। कबीरदास जी का संदेश यही है कि व्यक्ति को बाहरी आडंबरों से हटकर सच्चे ज्ञान की ओर बढ़ना चाहिए।

निष्कर्ष—कबीर की साखियाँ हमें गुरु के महत्व, आत्मा और परमात्मा के सम्बन्ध, तथा अज्ञान से ज्ञान की ओर बढ़ने का मार्ग दिखाती हैं। वे हमें सिखाते हैं कि सच्ची भक्ति केवल बाहरी कर्मकांड से नहीं, बल्कि आत्मबोध और सत्य की खोज से प्राप्त होती है। गुरु का मार्गदर्शन, आत्मशुद्धि और सत्य की खोज ही जीवन का वास्तविक उद्देश्य है।

Answer 9.

नागार्जुन के प्रकृति-चरित्र की विशेषता

नागार्जुन हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध कवि थे, जिन्होंने अपने काव्य में सामाजिक, राजनीतिक और प्राकृतिक विषयों का सजीव चित्रण किया। वे प्रकृति के कुशल चितेरे थे और उनकी कविताओं में ग्रामीण जीवन, प्राकृतिक सौंदर्य, और मानवीय संवेदनाएँ प्रमुखता से उभरकर आती हैं। **"बादल को घिरते देखा है"** कविता में उन्होंने हिमालयी क्षेत्र के प्राकृतिक सौंदर्य का अदभुत चित्रण किया है।

प्राकृतिक सौंदर्य का अनुपम चित्रण

इस कविता में कवि ने मानसून के बादलों के माध्यम से पर्वतीय दृश्यों को अत्यंत सुंदरता से प्रस्तुत किया है। उन्होंने हिमालय की चोटियों पर बादलों के मंडराने, घाटियों में उमड़ते-घुमड़ते मेघों और बारिश के बदलते रूपों का सजीव चित्रण किया है।

I. **बादलों का दृश्यात्मक वर्णन**—कवि ने बादलों के घिरने की प्रक्रिया को बहुत ही संवेदनशीलता और गहराई से चित्रित किया है। वे कहते हैं कि उन्होंने हिमालय की पहाड़ियों पर काले घने बादलों को धीरे-धीरे घिरते हुए देखा है। यह दृश्य न केवल सौंदर्य से भरपूर है, बल्कि इसमें एक रोमांचक रहस्यात्मकता भी है।

"बादल को घिरते देखा है"
"उन्मुक्त गगन के पंछी को, फड़फड़ फड़फड़ भागते देखा है"

इस पंक्ति में कवि ने बादलों के आगमन को इस तरह चित्रित किया है कि ऐसा प्रतीत होता है मानो पूरी प्रकृति इस परिवर्तन को महसूस कर रही हो।

II. **मानसून और पहाड़ी जीवन**—नागार्जुन ने पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों और पशुओं पर भी बादलों और बारिश के प्रभाव को चित्रित किया है। बादलों के घिरते ही नदियों का जलस्तर बढ़ जाता है, चरवाहे अपनी भेड़ों को सुरक्षित स्थान पर ले जाने लगते हैं, और पक्षी किसी आश्रय की खोज में उड़ने लगते हैं। यह चित्रण हिमालयी जीवन की कठिनाइयों को भी उजागर करता है।

III. **बदलते मौसम का प्रभाव**—कवि ने इस कविता में बदलते मौसम के सूक्ष्म परिवर्तनों को भी बड़े प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। पहाड़ों पर सूरज की रोशनी के बदलते रंग, हवा में ठंडक का अनुभव, और बारिश के आगमन से पहले की उमस-इन सभी को बहुत ही संवेदनशीलता से उकेरा गया है।

"झिंगुरों की झंकारों में वह गूंज निहारी है"

इस पंक्ति में कवि ने बारिश से पहले झिंगुरों की ध्वनि का उल्लेख किया है, जो वातावरण में एक अलौकिक संगीत का एहसास कराती है।

IV. **ध्वन्यात्मक एवं बिंबात्मक सौंदर्य**—नागार्जुन की यह कविता ध्वन्यात्मक और बिंबात्मक सौंदर्य से भरपूर है। उन्होंने बादलों की गड़गड़ाहट, वर्षा की बूंदों की टपटपाहट, और हवाओं के वेग को इस प्रकार चित्रित किया है कि पाठक स्वयं को उस प्राकृतिक वातावरण में उपस्थित महसूस करता है।

निष्कर्ष—नागार्जुन की **"बादल को घिरते देखा है"** कविता केवल बादलों और बारिश का चित्रण मात्र नहीं है, बल्कि यह प्रकृति के साथ मानवीय संवेदनाओं के गहरे संबंध को भी दर्शाती है। उन्होंने इस कविता के माध्यम से यह बताया है कि प्रकृति की हर छोटी-बड़ी घटना हमारे जीवन को प्रभावित करती है। कवि की संवेदनशील दृष्टि और उत्कृष्ट चित्रण क्षमता के कारण यह कविता हिंदी साहित्य में प्रकृति-वर्णन की एक अमूल्य कृति बन गई है।

Answer 10.

(i) प्रस्तुत पंक्तियों की वक्ता प्रभा तथा श्रोता समर है।

(ii) इस पंक्तियों में समर और उसकी पत्नी प्रभा के भविष्य के सपनों की बात की जा रही है। समर एक महत्त्वाकांक्षी युवक है, जो सिर्फ़ आर्थिक स्थिति सुधारने तक सीमित नहीं रहना चाहता, बल्कि अपने जीवन को बड़े लक्ष्यों और ऊँचे आदर्शों के साथ जीना चाहता है।

(iii) 'सारा आकाश' उपन्यास के आधार पर संयुक्त परिवार के युवकों की स्थिति निम्नलिखित होती है—

I. स्वतंत्रता का अभाव

II. आर्थिक निर्भरता

III. पारिवारिक दबाव और ज़िम्मेदारियाँ

IV. स्वप्न और यथार्थ के बीच संघर्ष

(iv) **"सारा आकाश"** उपन्यास प्रसिद्ध लेखक **राजेंद्र यादव** द्वारा लिखा गया है, जिसमें मध्यवर्गीय परिवार की समस्याओं, दांपत्य जीवन के संघर्षों और सामाजिक व्यवस्था के बीच पनपने वाली मानसिक कुंठाओं को दर्शाया गया है। उपन्यास के मुख्य पात्र समर और प्रभा के वैवाहिक जीवन के माध्यम से भारतीय समाज की जटिलताओं को उजागर किया गया है। संवाद के आधार पर, प्रभा के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ स्पष्ट होती हैं—

I. **महत्त्वाकांक्षी और स्वप्नद्रष्टा**—प्रभा केवल वर्तमान को देखकर संतुष्ट रहने वाली स्त्री नहीं है, बल्कि उसके भविष्य को लेकर ऊँचे सपने हैं। वह अपने जीवन में कुछ बड़ा हासिल करना चाहती है और सीमित साधनों में बंधकर जीना उसे स्वीकार नहीं।

II. **व्यावहारिक सोच रखने वाली**—प्रभा यथार्थवादी है और जानती है कि केवल पैसों की समस्या नहीं, बल्कि असली चुनौती उनके ऊँचे सपनों और आदर्शों को पूरा करना है। वह अपने और समर के भविष्य को लेकर एक स्पष्ट दृष्टि रखती है।

III. **मानसिक रूप से मजबूत**—समाज में महिलाओं को अक्सर अपने हालात से समझौता करना सिखाया जाता है, लेकिन प्रभा अपने विचारों और आकांक्षाओं को लेकर दृढ़ रहती है। वह केवल परिस्थितियों का रोना रोने के बजाए उन पर विचार कर समाधान की दिशा में सोचती है।

IV. **आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता की भावना**—प्रभा आर्थिक और मानसिक रूप से आत्मनिर्भर बनना चाहती है। वह चाहती है कि उसका जीवन केवल परिवार और परंपराओं तक सीमित न रहे, बल्कि उसे अपने सपनों को पूरा करने का अवसर भी मिले।

V. **संवेदनशील लेकिन दृढ़ निश्चयी**—वह अपने जीवन में आने वाली कठिनाइयों से घबराती नहीं, बल्कि उनका समाधान खोजने का प्रयास करती है। यह दिखाता है कि वह भावुक होने के साथ-साथ आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी भी है।

निष्कर्ष—प्रभा "सारा आकाश" की एक सशक्त स्त्री पात्र है, जो उस समय की पारंपरिक भारतीय नारी से अलग सोच रखती है। वह अपने सपनों और भविष्य को लेकर गंभीर है और परिस्थितियों को समझकर तदनुसार कार्य करने में विश्वास रखती है। उसके चरित्र में महत्त्वाकांक्षा, आत्मनिर्भरता, यथार्थवादी दृष्टिकोण और आत्मसम्मान की झलक स्पष्ट रूप से मिलती है, जो उसे इस उपन्यास की सबसे प्रभावशाली महिला पात्रों में स्थान दिलाती है।

Answer 11.

राजेंद्र यादव द्वारा रचित **'सारा आकाश'** हिंदी साहित्य का एक महत्त्वपूर्ण उपन्यास है, जो मध्यमवर्गीय संयुक्त परिवार में व्याप्त तनाव, घुटन और उससे उत्पन्न विकृतियों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है। यह उपन्यास न केवल उस समय की सामाजिक व्यवस्था को उजागर करता है, बल्कि आज भी इसकी प्रासंगिकता बनी हुई है। इसमें पारिवारिक संघर्ष, दांपत्य जीवन की उलझनें और व्यक्ति की स्वतंत्रता की छटपटाहट का सजीव चित्रण किया गया है।

संयुक्त परिवार की घुटन और उसमें पनपती विकृतियाँ

'सारा आकाश' उपन्यास एक मध्यमवर्गीय संयुक्त परिवार की पृष्ठभूमि पर आधारित है, जिसमें एक नवविवाहित युवक समर और उसकी पत्नी प्रभा के बीच के रिश्तों की जटिलता को केंद्र में रखा गया है। यह कहानी संयुक्त परिवार की रूढ़िवादी सोच, परंपराओं की बेड़ियाँ और व्यक्ति की आकांक्षाओं के टकराव को उभारती है।

I. **तनाव और घुटन**—संयुक्त परिवार में रहने वाले सदस्यों के बीच अक्सर आपसी सामंजस्य का अभाव रहता है, जिससे व्यक्तिगत इच्छाओं का दमन होता है। समर, जो एक शिक्षित और आत्मसम्मान रखने वाला युवक है, अपने ही घर में असहाय महसूस करता है।

- विवाह के तुरंत बाद ही वह संयुक्त परिवार की कठोर और दकियानूसी सोच का शिकार हो जाता है।
- उसकी पत्नी प्रभा के साथ उसके संबंध सामान्य नहीं हो पाते क्योंकि परिवार के रीति-रिवाज और सामाजिक दबाव उनके बीच एक दीवार बना देते हैं।
- समर के गुस्से, चिड़चिड़ाहट और असंतोष का कारण परिवार द्वारा उसकी इच्छाओं की अनदेखी और स्वतंत्रता का दमन है।

II. **विवाह और पारिवारिक अपेक्षाएँ**—समर और प्रभा के रिश्ते में तनाव का मुख्य कारण संयुक्त परिवार की दखलअंदाज़ी और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अभाव है।

- विवाह के बाद भी प्रभा और समर को एक-दूसरे के साथ समय बिताने का अवसर नहीं मिलता।
- परिवार की अनावश्यक रोक-टोक और हस्तक्षेप उनके बीच गलतफहमियों को जन्म देता है।
- प्रभा को एक आदर्श बहू बनने की उम्मीदों में बांध दिया जाता है, जिससे उसका आत्मसम्मान आहत होता है।
- समर, जो विवाह को एक नए जीवन की शुरुआत मानता था, अब एक गहरे मानसिक तनाव और कुंठा में डूबने लगता है।

III. संयुक्त परिवार की कठोरता और स्वतंत्रता का दमन—संयुक्त परिवार में व्यक्तिगत स्वतंत्रता का कोई महत्त्व नहीं होता। परिवार की मान्यताएँ और परंपराएँ ही व्यक्ति की सोच और फैसलों पर हावी रहती हैं।

- समर के माता-पिता और भाई-भाभी की सोच यह है कि नई बहू को परिवार के बनाए नियमों का पालन करना चाहिए, चाहे इससे उसका व्यक्तिगत जीवन प्रभावित क्यों न हो।
- समर का विद्रोह और प्रभा की चुप्पी इस संयुक्त परिवार की असंवेदनशीलता और कठोरता को उजागर करते हैं।
- घर के बड़े बुज़ुर्गों के फैसले ही अंतिम होते हैं, जिससे युवाओं की आकांक्षाओं का दम घुट जाता है।

उपन्यास का उद्देश्य—'सारा आकाश' उपन्यास का मुख्य उद्देश्य संयुक्त परिवार में व्यक्ति की घुटन और मानसिक द्वंद्व को उजागर करना है। यह उपन्यास दिखाता है कि यदि परिवार में पारस्परिक समझ और स्वतंत्रता का अभाव हो, तो व्यक्ति मानसिक तनाव का शिकार हो जाता है और रिश्ते बिगड़ने लगते हैं।

I. संयुक्त परिवार की विसंगतियाँ—उपन्यास संयुक्त परिवारों की उन कमियों को उजागर करता है, जहाँ व्यक्ति की इच्छाओं को महत्त्व नहीं दिया जाता और उसे परंपराओं के नाम पर दबाया जाता है।

- संयुक्त परिवार की अत्यधिक दखलअंदाज़ी पति-पत्नी के रिश्ते को कमज़ोर कर देती है।
- समर और प्रभा दोनों संवादहीनता और सामाजिक अपेक्षाओं के बोझ तले दब जाते हैं।
- परिवार के सदस्य आपस में प्रेम और समझदारी से नहीं, बल्कि रीति-रिवाजों के बंधन में बंधकर जीते हैं।

II. युवाओं की आकांक्षाएँ और उनकी स्वतंत्रता—राजेंद्र यादव इस उपन्यास के माध्यम से यह संदेश देना चाहते हैं कि युवाओं को अपने जीवन के फैसले खुद लेने की आज़ादी होनी चाहिए।

- समर जैसे शिक्षित युवक के लिए भी संयुक्त परिवार की जकड़न से बाहर निकलना कठिन हो जाता है।
- विवाह के बाद पति-पत्नी को एक-दूसरे को समझने का अवसर मिलना चाहिए, लेकिन संयुक्त परिवार में यह संभव नहीं होता।
- नवविवाहित स्त्री को केवल गृहस्थी तक सीमित करने की मानसिकता को बदलने की ज़रूरत है।

III. सामाजिक बदलाव की आवश्यकता—यह उपन्यास संयुक्त परिवार की जड़ता पर सवाल उठाता है और यह बताता है कि समाज को बदलने की ज़रूरत है।

- विवाह सिर्फ सामाजिक परंपराओं का पालन करने के लिए नहीं, बल्कि दो व्यक्तियों के बीच आपसी समझ और सहयोग पर आधारित होना चाहिए।
- परिवार को अपनी संकीर्ण सोच छोड़कर नए जमाने की आवश्यकताओं को समझना चाहिए।
- यदि परिवार में पारस्परिक सम्मान, प्रेम और स्वतंत्रता होगी, तो तनाव और घुटन की स्थिति उत्पन्न नहीं होगी।

Answer 12.

'सारा आकाश' उपन्यास में शिरीष बाबू एक ऐसे व्यक्ति हैं, जो संयुक्त परिवार की जटिलताओं को समझते हैं और उसमें आने वाली समस्याओं से अवगत हैं। वे इस विचारधारा के पक्षधर नहीं हैं कि व्यक्ति की स्वतंत्रता और इच्छाओं को पारिवारिक नियमों और परंपराओं के अधीन पूरी तरह से दबा दिया जाए।

मैं शिरीष बाबू के विचारों से काफी हद तक सहमत हूँ, क्योंकि संयुक्त परिवार में जहां आपसी सहयोग और प्रेम होता है, वहीं अक्सर व्यक्तियों की भावनाओं का दमन भी किया जाता है। इसमें विशेष रूप से नई पीढ़ी के युवाओं को अपनी इच्छाओं के विरुद्ध समझौते करने पड़ते हैं, जिससे वे मानसिक रूप से तनावग्रस्त हो जाते हैं।

शिरीष बाबू का यह मानना कि संयुक्त परिवार व्यक्ति की स्वतंत्रता, निजी जीवन और भावनात्मक संतुलन पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है, बहुत हद तक सही है। उनका यह विचार भी महत्त्वपूर्ण है कि संयुक्त परिवार में आपसी तालमेल और समझदारी न हो, तो वह रिश्तों में तनाव और कटुता को जन्म दे सकता है।

शिरीष बाबू के चरित्र की तीन प्रमुख विशेषताएँ—

I. व्यावहारिक सोच रखने वाले व्यक्ति

- शिरीष बाबू एक व्यावहारिक व्यक्ति हैं, जो समाज और परिवार की वास्तविकताओं को समझते हैं। वे जानते हैं कि संयुक्त परिवार में रहने से किस प्रकार स्वतंत्रता सीमित हो जाती है और व्यक्ति को अपने अनुसार जीवन जीने का अवसर नहीं मिलता।

II. समझदार और संवेदनशील

- वे संवेदनशील और सहृदय व्यक्ति हैं, जो परिवार की स्थितियों को गंभीरता से देखते हैं और उन पर तार्किक दृष्टिकोण रखते हैं। वे नए जमाने की सोच के समर्थक हैं और मानते हैं कि व्यक्ति को अपनी स्वतंत्रता और इच्छाओं के अनुसार निर्णय लेने का अधिकार मिलना चाहिए।

III. उदार और सहानुभूति रखने वाले व्यक्ति

- शिरीष बाबू दूसरों के प्रति सहानुभूति और उदारता का भाव रखते हैं। वे न केवल अपने विचारों को खुलकर व्यक्त करते हैं, बल्कि परिवार के अन्य सदस्यों की स्थिति को भी समझने का प्रयास करते हैं।

Answer 13.

(i) उक्त कथन कालिदास ने मल्लिका से कहा।

(ii) यह संवाद उस समय कहा गया है जब कालिदास वर्षों बाद अपने जन्मस्थान (ग्राम) में लौटता है और अपनी बचपन की मित्र एवं प्रेमिका मल्लिका से मिलता है। उस समय वर्षा हो रही होती है, और मल्लिका उसे बारिश में भीगने से बचने के लिए कहती है। इसके उत्तर में कालिदास यह भावनात्मक और गहरे अर्थ वाला संवाद कहते हैं।

(iii) कथन का अंतर्निहित अर्थ यह है कि भीगना केवल एक शारीरिक अनुभव नहीं, बल्कि एक गहरी भावनात्मक

अनुभूति भी हो सकता है। कालिदास के लिए यह वर्षा प्रकृति से, अपने अतीत से और स्वयं से पुनः जुड़ने का प्रतीक है।

(iv) 'आषाढ़ का एक दिन' मोहन राकेश द्वारा लिखा गया एक प्रसिद्ध नाटक है, जिसमें कालिदास का चरित्र एक संवेदनशील, सौंदर्यप्रेमी और आत्मविभोर व्यक्ति के रूप में उभरकर आता है। उपरोक्त संवाद से कालिदास के व्यक्तित्व की गहराई को समझा जा सकता है। इस संवाद में बारिश में भीगना उनके लिए केवल एक साधारण क्रिया नहीं है, बल्कि यह जीवन की महत्त्वाकांक्षा, संवेदना और अनुभूति का प्रतीक है।

I. **संवेदनशील और सौंदर्यप्रिय व्यक्तित्व**—कालिदास प्रकृति के अद्वितीय प्रेमी हैं। उनके लिए वर्षा केवल एक प्राकृतिक घटना नहीं है, बल्कि एक गहरी आत्मीय अनुभूति है। वर्षों बाद भीगने का उनका आनंद इस बात का प्रतीक है कि वे जीवन की छोटी-छोटी खुशियों को संजोकर रखते हैं और उन्हें पूरी तरह जीना चाहते हैं। यह उनका सौंदर्यबोध और संवेदनशीलता दर्शाता है।

II. **आत्मविभोर और कल्पनाशील प्रवृत्ति**—कालिदास अपने विचारों और भावनाओं में इतने डूबे होते हैं कि उन्हें बाहरी परिस्थितियाँ ज़्यादा प्रभावित नहीं करतीं। वे वर्षा की ठंड और असुविधा की चिंता न करके उसमें भीगने को ही जीवन की पूर्णता मानते हैं। यह उनकी कल्पनाशीलता और आत्मलीनता को दर्शाता है, जो बाद में उनके काव्य में भी प्रतिबिंबित होती है।

III. **आत्मविस्मृत और संघर्षशील व्यक्तित्व**—कालिदास अपने जीवन और रचनात्मकता के प्रति पूर्णतः समर्पित हैं। वे जीवन के हर क्षण को महसूस करना चाहते हैं, और इसीलिए बारिश में भीगने का अनुभव भी उनके लिए महत्वपूर्ण हो जाता है। यह संवाद संकेत देता है कि वे अपने जीवन के संघर्षों के बावजूद भावनाओं में बह जाने वाले, संवेदना से भरे व्यक्ति हैं, जो जीवन की कठिनाइयों से परे सौंदर्य को खोजने का प्रयास करते हैं।

Answer 14.

विलोम का चरित्र-चित्रण—'आषाढ़ का एक दिन' मोहन राकेश द्वारा रचित एक प्रसिद्ध नाटक है, जिसमें इतिहास और मानवीय संवेदनाओं को गहराई से चित्रित किया गया है। इस नाटक का प्रमुख पात्र विलोम आज के मानव की नियति को व्यक्त करने वाला एक सशक्त चरित्र है। वह केवल एक खलनायक नहीं, बल्कि परिस्थितियों का शिकार हुआ एक ऐसा व्यक्ति है, जो व्यक्तिगत इच्छाओं, सामाजिक प्रतिष्ठा और आत्मसंघर्ष के बीच झूलता रहता है।

विलोम को महत्त्वाकांक्षी, स्वार्थी और व्यावहारिक व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन वह परंपरागत खलनायकों से भिन्न है क्योंकि वह पूरी तरह से नकारात्मक नहीं है। उसमें मानवीय कमज़ोरियाँ और समाज के प्रभाव को झेलने की असहायता स्पष्ट रूप से झलकती है।

विलोम के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ

I. **महत्त्वाकांक्षी और यथार्थवादी**
- विलोम एक ऐसा व्यक्ति है, जो अपने व्यक्तिगत जीवन और प्रेम के बावजूद सामाजिक प्रतिष्ठा और सत्ता की ओर आकर्षित होता है।
- उसे यह अहसास हो जाता है कि केवल साहित्य और प्रेम से जीवन सफल नहीं हो सकता, बल्कि समाज में ऊँचा स्थान पाने के लिए व्यावहारिक बनना पड़ता है।

II. **स्वार्थी और अवसरवादी**
- वह मल्लिका से प्रेम करता है, लेकिन जब उसके जीवन में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा पाने का अवसर आता है, तो वह उसे छोड़कर राजा के दरबार में चला जाता है।
- वह केवल अपने व्यक्तिगत स्वार्थ की पूर्ति के लिए नाटक और काव्य को एक साधन बना लेता है।

III. **परिस्थितियों का शिकार और आत्मसंघर्ष से ग्रस्त**
- परंपरागत खलनायकों की तरह विलोम क्रूर या दुष्ट नहीं है, बल्कि वह एक असमंजस में पड़ा व्यक्ति है, जो अपने निर्णयों के कारण भीतर से टूटता भी है।
- जब वह दरबार में सफलता पाता है, तब भी उसकी आत्मा शांति से दूर रहती है।
- मल्लिका को छोड़ने के बाद वह मानसिक रूप से अशांत हो जाता है और प्रेम तथा सफलता के बीच खुद को अधूरा महसूस करता है।

विलोम पारंपरिक खलनायक से किस प्रकार भिन्न है?

I. **नैतिक रूप से पूर्णतः दुष्ट नहीं है**
- पारंपरिक खलनायक पूरी तरह से नकारात्मक होते हैं, लेकिन विलोम में अंतरद्वंद्व है।
- वह परिस्थितियों के कारण गलत निर्णय लेता है, लेकिन अंततः उसे अपने जीवन की त्रासदी का अहसास हो जाता है।

II. **भावनात्मकता और आत्मसंघर्ष से युक्त**
- विलोम केवल सत्ता और प्रतिष्ठा का लोभी नहीं है, बल्कि एक संवेदनशील व्यक्ति भी है, जो सफलता और प्रेम के बीच उलझा हुआ है।
- वह जानता है कि उसने मल्लिका को छोड़कर गलती की, लेकिन अपनी कमजोरी के कारण वापस नहीं लौट पाता।

III. **समाज की कठोर वास्तविकता का प्रतीक**
- वह एक यथार्थवादी चरित्र है, जो आज के मानव की स्थिति को दर्शाता है, जहाँ लोग अपने आदर्शों को छोड़कर सफलता और समाज में प्रतिष्ठा पाने के लिए समझौते कर लेते हैं।
- वह उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है, जो अपने सपनों और वास्तविकता के द्वंद्व में उलझकर समझौतावादी बन जाते हैं।

Answer 15.

'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में मल्लिका और कालिदास का प्रेम गहरा और आत्मीय था, लेकिन परिस्थितियों ने उन्हें अलग कर दिया। कालिदास जब अपने ग्राम प्रांत में लौटते हैं, तो भी वे मल्लिका से मिलने नहीं आते और दूसरी ओर, वे राजकुमारी प्रियंगुमंजरी से विवाह कर लेते हैं। यह जानने के बाद भी मल्लिका के हृदय में उनके लिए कोई विषाद या क्रोध नहीं है।

इसका मुख्य कारण यह है कि मल्लिका का प्रेम नि:स्वार्थ और त्यागमयी था। वह कालिदास को अपनी व्यक्तिगत भावनाओं के आधार पर बाँधकर नहीं रखना चाहती थी। उसने कालिदास को अपनी महत्त्वाकांक्षाओं की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया था और जब वह सफलता प्राप्त कर चुके थे, तब वह उनके निर्णयों को सहज रूप से स्वीकार कर रही थी।

मल्लिका जानती थी कि कालिदास की स्थिति बदल चुकी है, वे अब केवल उसके ग्राम के साधारण कवि नहीं रहे, बल्कि वे अब एक राजकवि और राजपरिवार के सदस्य बन चुके हैं। वह इस परिवर्तन को समझती है और कालिदास के जीवन में आए बदलावों को सहजता से स्वीकार कर लेती है। उसका प्रेम स्वामित्व की भावना से परे था, इसलिए उसमें विषाद के लिए कोई स्थान नहीं था।

सच्चे प्रेम की परिभाषा—सच्चा प्रेम त्याग, नि:स्वार्थता और व्यक्ति की स्वतंत्रता के सम्मान से परिपूर्ण होता है। यह किसी को बंधन में रखने का नाम नहीं, बल्कि उसकी खुशी में अपनी खुशी ढूंढने का नाम है।

नाटक के संदर्भ में मल्लिका का प्रेम इस परिभाषा को पूर्ण रूप से चरितार्थ करता है। वह कालिदास को स्वयं से अधिक महत्त्वपूर्ण मानती है, उनकी सफलता के लिए अपना सुख और भविष्य तक कुर्बान कर देती है।

सच्चे प्रेम की विशेषताएँ:

I. **स्वार्थहीनता**—सच्चा प्रेम किसी स्वार्थ या लाभ के लिए नहीं होता, बल्कि नि:स्वार्थ भाव से किया जाता है।

II. **त्याग और बलिदान**—प्रेम में त्याग और समर्पण का भाव होता है, जैसा कि मल्लिका ने किया।

III. **स्वतंत्रता और सम्मान**—प्रेम में बंधन नहीं, बल्कि स्वतंत्रता का भाव होता है। मल्लिका ने कालिदास को कभी बाँधने की कोशिश नहीं की।

IV. **दर्द में भी संतोष**—भले ही मल्लिका को कालिदास से विवाह न करने का दुख था, लेकिन वह अपनी पीड़ा को शांत रखती है और उनके निर्णय को स्वीकार कर लेती है।

निष्कर्ष—'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में मल्लिका सच्चे प्रेम का प्रतीक बनकर उभरती है। वह प्रेम में अधिकार जताने की जगह त्याग को प्राथमिकता देती है। कालिदास के जीवन में बदलाव के बावजूद, वह उनके प्रति अपने प्रेम और सम्मान को बनाए रखती है। यही सच्चे प्रेम की परिभाषा है— प्रेम व्यक्ति को बाँधता नहीं, बल्कि उसे उन्मुक्त करता है।

● ● ●